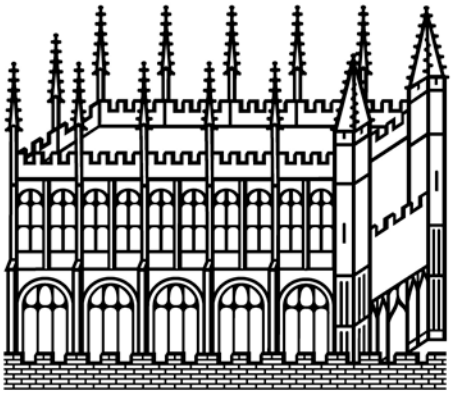

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Sukul 1

13.A-37. Hindi Sukul 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

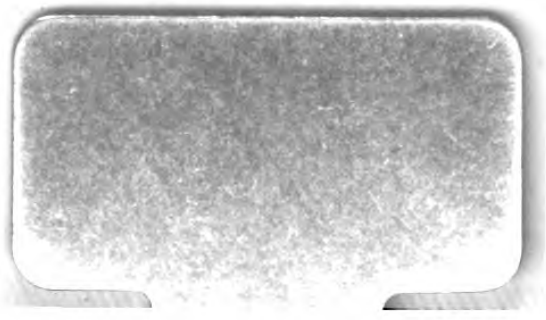

# Umāpati-digvijaya.

Aomapat Dig Bijae

# श्रीमदुमापति दिग्विजय

اوماپت دگبجے

श्री पण्डित महेशदत्त मुकुल कविकृत

जिसमें

श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगण मण्डली मण्डन पण्डित्याद्यनेक गुण मण्डित श्री अयोध्यानिवासि स्वर्गवासि श्री मदुमापति जी महाराज का दिग्विजय और ग्रन्थ निर्म्माण आदि अनेक चरित्र वर्णित हैं

वही पहिलीवार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी

दिसम्बर सन् १८८०ई०

# श्रीमदुमापति दिग्विजय

اوماپت دگوجے

श्री पण्डित महेशदत्त मुकुल कविकृत

जिसमें

श्रीमन्महामहोपाध्याय गुणिगण मण्डली मण्डन

पाण्डित्यादनेक गुण पण्डित श्री अयोध्यानिवासि

स्वर्ग वासि श्री मदुमापति जी महाराज का दिग्विजय

और ग्रन्थ निर्म्माण आदि अनेक चरित्र वर्णित हैं

वही पहिलीवार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापे खाने में छपी

दिसम्बर सन् १८८०ई०

श्रीरामोविजयतेतराम

# श्रीमदुमापतिदिग्विजयः

## दोहा

वाराणासुरवदाराणाविपतिशिवकाशप्रमहराज
करुणाकरुणालयविप्रदग्ध्यस्वाकृआज १
जननिअङ्कगतकुचयुगलगहेकरतपयपान
कभुदि हसतलखिवमातमुखबन्दोरघुकुलभान २

## दोधेछन्द

रामचन्द्रगुरुमित्रसभासद श्रीमदुमापतिजीके
बन्दोंपदसराजज्यहिबन्दतकोविदकुलजगतीके
जिनकेछात्ररामचरणाभिधबुधवरोपाधुवासी
लालजीवमुन्शीज्यहिसम्मतिलहिभेग्रन्थप्रकाशी ३

## दोहा

श्रीमद्दुसापति दिग्विजय मुन्शी उर माहिं ।
कियो करत भाषा स्वई न्यूनाधिक जहं नाहिं ४
श्रीमत्संवत उन्नीस शत तेंतिसा १९३३ भादों मास
बुधसित गणपति ४ तिथि रचत राम नगर कर वास ५

## हरिगीतिका

यक तो न मैं कवि दूसरे बुधराम चरण कहैं यही ।
यह ग्रन्थ रचहूं चिपाठ जू को सरल भाषहि मैं सही
यासों सहज ही रचहूं निज गुरु चरित जेहि सब जानही
मैं धनावली निवासि विप्र महेशदत्त सुनामही ६

## दोहा

यद्यपि चरित अपार किय कोविद लै अवतार ।।
पर मैं संक्षेपहि कहत निज मति की अनुसार ७
प्रथम कहहूं ज्यहि हेतु श्री महाराज अवतार ।
कलयुग में भोपाय ज्यहि क्षत्रिक जीव निस्तार ८

## चौपाई

जबते द्वापर युग के अन्ता ।
कृष्ण चन्द्र जग दीपु अनन्ता ।।
धीरयुधिष्ठिर धर्म कुमारा ।

बसैं बिप्र सब श्रुति अधिकाईं
क्षत्री वैश्य शूद्र कायथ कुल।
बसत विपुल निबहत सबमिलभुल
ठौर ठौर जस विहित विधाना।
धर्म्म कर्म्म प्रचलित विधि नाना ७
काहु न व्यापत दुख संसारी।
जासों सब जन चारु विचारी॥
कोइ उदास कोई नृप सेवा।
करत चपत यासों सुखमेवा ८
किमिनहोहिं इमि प्रजा सुखारी।
जहं क्षत्री कुल नृपति विचारी॥
उत्तम वंश विसेन नृपाला।
भीसमल्ल अस नाम विशाला ९
जिनकी सन्तति श्रीमहराजा।
उदित नरायण मल्ल विराजा॥
राज्य सभौली गद्दी माहीं।
अहैं विराजमान गुण गाहीं १०
इनकी कीर्त्ति पुराय नृप नीती।
विदित मही मण्डल सुपुनीती

भूपति दीन महाजन साधू ।
जानत सकल नहीं कछु बाधू ११

दोहा

यासों वर्णन की नहीं आवश्यकता कोय ।
ज्यहि जानत संसार त्यहि काहू कहे यपा होय १
पिता पितामह आदि के नाम लिखत सुनि लेहु
जन्म कुण्डली बहुरि श्री महाराज की येहु ॥ १ ॥
महाराज के जनक कर प्राङ्कर पति बुध नाम ।
सदानन्द पति बुध पितामह का नाम लेलाम २

चौपाई

त्रिभुवन पति प्रपितामह नामा ।
सकल भाँति सब पूरण कामा ॥
महाराज के हैं दुय भाई ।
प्रथम लालसी पति बुधराई ।३।
दूजे बुध विद्यापति नामा ।
यथा नाम तस सबगुण धामा ॥
इन कर धर्म्म ज्ञान पंडिताई ।
अरु विचार कछु कहि विधि गाई ४
ऐसे होत महात्मा लोगू ।

जगदुपकार हेत बहु योगू।
जिन के कारण ॥ नर अज्ञानी
है सचेत लहैं मुक्ति सुहानी ।५।
अरु अष्टादश से इक्यावन ।
संवत सब विधि जौन सुहावन
चारि सहस अरु सै पञ्चानव ।
वर्ष गये कलि के जबतब भव ई
आश्विन वदि नवमी बुध वारा ।
आर्द्रा नीसर चरण विचारा॥
वृश्चिक लग्न जगत हितकारी।
जगदीश्वर शुभ धर्म्म प्रचारी ७
श्रुति मारग पालक गुण धामा।
रामचन्द्र गुरु वर पर नामा।
श्री वशिष्ठ अवतार कराई।
श्री मदुमापति जीव त्यवारी ८
लीन सबै अवतार सुहावन ।
पावन सब विधि सबहि सुभावन॥
यहि मुहूर्त कर चित्र मनोहर।
लिखा लखहिं सज्जन अति नीकर

या महं चौथे गृह से तीन्हीं।
है गृह रहित सदन ल्यो चीन्हीं
सतयें ते नव सदनन माहीं।
है यक यक ग्रह तीसर ताहीं १०

शुक्र तुला के गुरु धन माहीं।
मङ्गल वृश्चिक वास कराहीं॥

ये सब निज निज ग्रह के स्वामी।
अरु बुध केन्द्री पूरण कामी ११
अस सर्व्वोत्तम योग न देखा।
कतहुं कुण्डली हम वह पेखा॥
सो किमि होय योग यहि भांती।
सज्जन कुण्डली कौन बिसाती १२

दोहा

देव भाग्य नर भाग्यसे सदा बड़ा ही होत
करि विचार देखहिं सुजन देव और नर गोत। १३
सब मुहूर्त्त गणि बुध महा पण्डित जनन बुलाय
जात कर्म विधि लिखित सब ह्वै मन मुदित कराय १४
अरु याचक नर्त्तक जनन दान दक्षिणा दीन
यथा उचित दै सबहि सब बहु उछाह तिनकीन १५
जो गोधन हाटक रत्न वस्त्रादिक उन दीन
काहू लिखो सुत जन्म व्यय लिखन न लेखा श्वीन
यहि विधि विद्यारम्भ अरु कार्णी गमन विचित्र
नवमीस षष्ठ शास्त्रार्थ बहु कीन होत सुनिचित्र
सिद्ध श्री महराज को चरित्र कीड़ा माहिं
नर्य नवकं वीते खुख्ख मानहु यक क्षणा माहिं

## चौपाई

दशमें वर्ष मुहूर्त्त विचारी।
पण्डित जी विद्या अनुहारी॥
विद्यारम्भ कराय यह नीके।
वेद विहित विधि सो बुध टीके ३
कछुहि दिनन्ह महँ पढ़ि सबलीन्हा
सब विद्याधिकारि जग चीन्हा॥
पठित पढ़ाइ से अपठित केरी।
कहत विशेष अर्थ मति हेरी ४
देखी पण्डित जन तहँ आवहिं।
लखि लघु वय मति अधिक लजावहिं
पुनि अचरज मानहिं सब काऊ।
कहँ यह वय कहँ इमि मति चाऊ ५
कहहु पढ़ावे को त्यहि पण्डित।
जासहँ बुद्धि प्रताप अखण्डित
जब न दीख पाठक तहँ कोई।
जन्म भूमि छोड़ी तब सोई ६
श्री काशी महँ पहुँचे जाई।
गङ्गास्नान कीन चित लाई॥

त्रिभुवनाथ दर्शन करि नीके।
भयउ निवास सबहि सुख लीके ७
श्रवण करण के शोला आई।
श्री विश्वनाथ पति के मठ जाई॥
कौन निवास तहां महराजा।
जुरन लागि तबहि जन समाजा ८
तीनि भट्ट नामी त्यहि काला।
काशी वासी अतिहि विशाला॥
कृष्णराम शेष व्याकरणी ।
ढोर भट्ट मीमांसक वरणी॥ ९।
भैरवराम मिश्र नैयायक ।
तीनिउँ शास्त्रवानि गुणदायक॥
दर्शन इन तिनिहुँन के भयऊ।
मति उनमनालयि उनगह्यऊ १०
प्राणाधिक सब के प्रिय लागे।
इन्हहिं पढ़ावत सब अनुरागे॥
मीमांसा व्याकरणाऊ न्याया।
पढ़न लागि त्रय शास्त्र सुहाया ११
पढ़त जो पाठ प्रश्न त्यहि आगे

करन लगे तब सब अनुरागे॥
अरु जो लखवत नये त्यहि कैरे॥
करत तुरत शुभ अर्थ घनेरे१२
यह चर्चा फैली सब ठामा।
जहँहि सुनो तहँ इन कर नामा॥
सुनि यह दयाछाच गणाधीये।
जो जेहि योग्य तुरत सो पाये१३
सम्मति करन हेतु बहु पण्डित।
आवन लगे जानि सति मण्डित॥
भयउ इहाँ तक यह व्यवहारा।
जहाँ होय कछु अधिक विचारा१४
तहँ इनते विन सम्मति लीने।
कोउ न करत कछु बुध परवीने॥
करै चहै कोउ कछु विन ताके
निर्णय होय न विनइन आँके १५
पढ़त पढ़ावत दिन अरु राती।
अस अवकाश न मिलत सँघाती॥
जो कछु वार बनावहिं भोजन।
करहिं तथापर कछु मनशोचन १६

पढ़न पढ़ावन की तिथि माहीं।
केवल एक बार कछु खाहीं ॥
तौनौं रोटी अरु तरकारी ।
भोजन होत न स्वादु बिचारी १७
अनध्याय महँ जब अवकाशा।
होत दाल रोटी की आशा ॥
मत सङ्गत अरु दर्शन देवा ।
होत तबै नहिं नित उठि सेवा १८
एकादशी आदि व्रत माहीं ।
फल कन्दादि यथोचित खाहीं।
दान अपार दान कर देना ।
ग्रहणे पुरानि अहैगुन लेना १९
जो कछु निकर होत दूसर को ।
सो दै देत सकल भूसुर को॥
भोजन समय छाक्र सौनवत्तक
खाहिं न भोजन होत नतवत्तक २०
यग्य अवतक प्रतिदिन अधिकाई
दान नियम देखत हौ भाई॥
आवत आजु काल्हि के हेतू ।

नहिं रावन कछु मन दैहैं २१
अरु जब कबहुँ गति महँ कोई।
इच्छा चर्च्चइ गीदे की होई ॥
सबहुँ मिठाई मेवा आदी।
सब कहँ दै बरैं आप प्रसादी २२
अरु सन्ध्या वन्दन के अन्तर।
गायक बाद्यक जुटिहैं निरन्तर
तब सङ्गीत शास्त्र परचारा।
होय भली विधि सहित विचारा २३
डेढ़ पहर दुय पहर रात तक।
यह चर्च्चा नित रहत न कछु शक।
इन लोगन का शुभ सत्कारू॥
होत यथोचित की निरधारू २४

दोहा

एक समय महराज के पिता जीव पुर ग्राम।
पण्डित पृच्छन पत्रिलयन आये काशी धाम २५
जैसे पशु भाखा कहाँ श्री काशी जी माहि।
तैसहि पूछा प्रेम युत ज्यहि देखा त्यहि पाहिं २६

चौपाई

है कोई विद्यार्थि त्यवारी।
रहौं कहहु जो सुन्यहु बिचारी॥
छोटे बड़े उहाँ के वासी।
यह सुनि बोले सहित हुलासी २७
महाराज तुम पूछत कैसे।
काशीबासी कोई न वैसे॥
जो न त्यवारिहि जानत होई।
जो सब देशा विदित न हिं गोई २८
इहि विधि सब कहँ सुनत बड़ाई।
महाराज ढिग पहुँचे आई॥
कुशल प्रश्न विधिवत करि पीछे
प्रेम मगन है पुनि इमि पूछे २९
कुल तुम्हार जन्म धाम कहाँ।
जानत सब काशी जो रहहू।
रहत सैकरन और हजारन।
पण्डित काशी माहिं विचारन ३०
हमहूँ रहे बहु दिन इहि थाना।
पर कोई जानत नहिं बासा॥

हमहिं काहु काहूहि कोउ नाहीं।
जानत इहें वह आवत नाहीं ३१
तुम्हीहि हित यह अनुज कामा।
आनु हेतु नाहिं है यह मामा ॥
इहि विधि कछु दिन महि नहं देखी।
नवउछाह हरषित नित पेखी ३२
आये निज भवनहि पुन मोदा।
रहि रहि उमगत महित विनोदा ॥
उहाँ यथा विधि पढ़न पढ़ावन।
काशी माहिं होत मन भावन ३३

दोहा

कृष्णराम जी ग्रोस के निकट एक दिन एक ।
महागाढ़ आचार्य पाण्डित्य हेतु करि टेक ३४
बड़े धूम धामी यती आये सहित विवेक ।
प्रश्नोत्तर अरु भक्ति करि के युक्ति अनेक ३५
यद्यपि ग्रोस जी निज समय एकै काशी माहिं ।
वेद कण्ठ पुरि मुकुन्द हैं दूसरो नाहिं ३६ ।
तदपि महा आचार्य सेवे यथोचित कोटि ।
कीनपुरी के निसि सोकरन छोड़ि प्रात की भोटि ३७

इतना सुनि महराज से गई न भई हहाय ।
प्रेम जीव के पक्ष पर बोलन लागो आय ३८

## चौपाई

इहाँकि कोटि प्रकट सब काऊ ।
ज्यहि सुनि बुधवर्कै चाऊ चाऊ ॥
दीन मलीन अचार्य्य अचारा ।
पूछ्यहु त्वरित कोटि को धारा ३९
बहुत वेर पीछे उनि राना ।
निज मैं उत्तर पूछि नहिं जाना ॥
हारि मानि बोला यह वाचा ।
मैं जो सुना सो देख्यौं साँचा ४०
सुन्यौं रहै श्री काशी माहीं ।
रहत प्रेम संशय कछु नाहीं ॥
वहि लखि आजु भयो सन्तुष्टा ।
यदपि रह्यौं प्रथम अनिरुष्टा ४१
अजो प्रथम बोलि भयो चूपा ।
कौन रहै कहिये बुध भूपा ॥
यह सुनि प्रेम जीव तब बोले ।
सुनहु अचार्य्य जीव अनमोले ४२

१९ ॥ ॥ ॥

आये काशी मांव मैं षड़ लिये बुध वृन्द ।
जिन्हहि देखि सुरगुरुहु कहै लागै मनमन्द ४८

चौपाई

अरु सब पण्डित ईश्वर रूपा ।
रहैं परन्तु होय बुध भूपा ॥
सब से अधिक जासु परिडताई
अरु शैखता विशेष बड़ाई ४-६
सकल शास्त्र ज्ञाता गुण धामा ॥
दूजे शास्त्री श्री रघुनाथा ।
येसब भाँति पूर्ण नहिं गाथा ५०
उभय लाय पण्डित महँ पण्डित ।
तेज प्रताप अकाश्र अखण्डित ॥
औरो गुरुन वर वरिडत माहीं ।
होत रहैं सो सो उन ठाहीं ५१
अरु कौनिउँ विधि येसह पूरुष ।
ज्यहि पण्डितहि लखहिं सो मूरुख ॥
इनके मारे आव वाव ही ।
बकन लगत कछु कहि न चावही ५२

अरु प्रास्त्रार्थ करनमहँ काहुकि।
का समाज करै जो ककु हाँकि॥
महराजाधिराज की आज्ञा।
परखन हेतु बुधन की ग्राज्ञा ५३
कह काणी मे जो शुभ पण्डित
तिन्हैं बुलावहु दान अखण्डित
देव उन्हैं जो मति महँ नागर।
होहिं डराहँ नहिं लखि शुलिश्रागर५४
यह सुनि कै प्रास्त्री सब नीके।
लेन परीक्षा लगे मुठीके ।।
जुटे सहस्रन पण्डित लोगा।
लगे परीक्षा देन सुयोगा ५५
एक तो वे प्रास्त्री वर पण्डित।
सकल प्रास्त्र महँ रहैं अखण्डित
दूजे श्री प्रास्त्री रघुनाथा।
सबल यह स्वभाव निजसाथा५६
जैसे कोउ आगो बुध आवैं।
बातहि ऐसे उन्हहिं दबावैं ।।
जासौं वै निरुत्तर ह्वै फिरहीं।

फेरी न परीक्षा कर मनकरहीं५७
जब श्री महाराज यह जाना ।
भयहु परीक्षक कर अभिमाना।
तब आपुहि पहुँचे नहिं जाई ।
जहाँ परीक्षा होत भुलाई५८
श्रीरघुनाथ प्रशंसि वर जैसे।
सब दिन लेत परीक्षा तैसे ॥
लेन लगे ताहू दिन सबकी।
सुनि वै प्रजा सकल रहैं खबकी५९
जासों प्रश्न भयो त्यहि काला
उत्तर दिय महराज विशाला
यहि विधि दशा दीपाकवुधकेरी।
भई परीक्षा पूरि न देरी ॥ ६०

दोहा

सब प्रशंसी लीने कहा आन परीक्षा माहिं ।
कत वत लावत आपहैं भला कहत हम नाहिं ६१
कछुक देर ठहरहु बहुरि आपहु की भलि भाँति ।
लेव परीक्षा तबहि सब कहियो जौन पासाति ६२

## चौपाई

यह सुनि महाराज मुनि बोले।
वचन सुधा सम अतिहि अमोले॥
जबते हम आये अरु जब तक।
वैठे हैं पूछत जो तब तक ६ ३
वह हमरीहि परीक्षा अहई।
और काहु की नहिं कोउ कहई॥
इतनेमैं आये विद्यार्थी।
श्रीधर शास्त्री को धनार्थी ६ ४

## दोहा

जिन के हित रघुनाथ अरु जगन्नाथ के नाम।
श्रीधरने यक पत्र लिखि दीन्हो रहे लखि काम ६ ५

## चौपाई

ये व्याकरण शास्त्र मैं छात्रा।
हैं परीपक्व विशेष सुपात्रा॥
लखि सो पत्र परस्पर दोई।
लगे हँसन करत बड़ गोई ६ ६
आये यक यक ये आये।
यह कहिकै बड़ हँसे उठाये॥

बहुरि उन्हन की लेन परीक्षा।
लगे यथा सब को दीक्षा है ७
परवैदीन मलिन विद्यार्थी।
उन सन्मुख किमि होहिं नयार्थी।
जो कछु कहिनि तुरत सो काटा।
जात रही उन की सब ठाटा है ८
तब श्री महाराज यह भाषा।
शास्त्रीजी सुनिये तजि माषा ।।
इन छात्रन कर उत्तम पक्षा।
है पुनीत सब विधि सो स्वच्छा है ९
करहु विचार आप सब भाँती।
इमि न कहहु नो तुम्हहिं पेसाती
यहै कहत विद्यार्थिन केरे।
पदपदार्थ पर अर्थ घनेरे १०
करन लागि श्री युत महराजा।
प्रगसिन बहु विधि साज समाजा
पर हरषा मह सब श्रीमहराजे।
प्रगसिन वचन खण्डि चित गाजे ११

दोहा

तबनिज वचन प्रमाण हित ग्राम्बिन भाष्य प्रमान
दियो स्वरूप बताइ निज यों श्रीमहराज महान ७२
तब ग्राम्बिन निज उक्ति सों चह्यो कछु उत्तर दैन।
हँसि बोल्यो महराज तब सुनहु ग्राम्बि यो बैन ७३

चौपाई

अब बड़ हर्ष हमहिं भो नीके।
जो निज उक्ति कहत तुम ठीके॥
ऋषि स्वरूप महँ भ्रम कछु नाहीं
हमकहँ होइहि गुनुमन माहीं ७४
जिमि पर्व्वत उखारि जो लेई ।
धरती फूल उखारत तेई ॥
होत न तनिक कठिनता तिमि येहू।
उक्ति स्वरूप नहिं कछु सन्देहू ७५
यह कहि ग्राम्बिन जो कछु भाषा।
कह्यो यहू तुरत न कछु भय राखा।
जब न रह्यो कछु उत्तर उपाऊ॥
तब ग्राम्बिन्ह यह बात बताऊ ७६
यही पक्ष पर कल्कि ग्राम्बार्य।

आपसे होइहि कहत यथार्थ॥
मुनि श्री महाराज कहु अच्छा।
कल्हि हमारि आउब यहि कक्षा ७७
इहि विधि तीनि दिवस श्रम कीन्हा
पुस्तिन सब विधि जो कछु चीन्हा
पान बनाये कछु बनि आवा ॥
हारि गये कवि कै सब दावा ७८
सति भेर महँ जो कछु पोचन।
बहुरि विचारत बहु विधि खोजत
सर्वा लिखि लिखि करि के कण्ठा
आवत प्रातहि बुद्धि अकुण्ठा ७९
सो श्री महाराज के आगे।
होत अशुद्ध सकल यक लागे॥
यह वृत्तान्त श्रवण करि राजा।
अमृतराउ जी बुधन समाजा ८०
अपने निकट बुलायहु नीके।
भो पुस्तक्वार्थ सकल विधि ठीके
तबहूँ त्यही विधि भाषा स्त्री
पुस्तिन दीन न उत्तर यथार्थ ८१

अरु है गये मूक प्रास्त्री जब।
अस्त राउ महराज नहीं तब॥
श्री महाराज जीव की पूजा।
कीन्ह भली विधि तजि के दूजा८२

दोहा।

तबते श्री महराज के नाम कर चहूँ फेर।
डङ्का बाजन लाग श्री काशी मैं शुभ टेर ८३
जिमि काशी सौंजाय कियचित्रकूट महराज।
बहुत भाँति प्रास्त्रार्थ सो बर्णत अवकी साज १
सम्वत अष्टादश पुनि प्रातरु छीहत्तरि महँ जब्ब।
रहेउ पचि प्रावीवर्ष श्री महराज को तब्ब २
करन हेतु पाषण्ड मत पर हठ वाद कहोरि।
दुर्जन मत खण्डन हितहि बहु अँगरेज निहोरि३

चौपाई

पहुँचे चित्रकूट महराजा।
जहाँ सिद्ध जन केरि समाजा॥
उन्ह महँ कुम्भ राम यक प्रास्त्री।
सब की कीन सलाह यक काशी ४
अरु प्रास्त्रार्थ अरम्भ यह नीके।

तीनि दिवस सो भोविधि ठीके
भये पराक्त सकलमतदूषक।
किमि नहोहिं लहि असमत भूषक५

दोहा

चित्रकूट सौं जिमि गयउ गवालेर महराज ।
अरु प्राप्तार्थ भयो कहत जिमि तहँभूप समाज१

चौपाई

चित्रकूट सों श्री महराजा ।
गवालेरेश सहित समाजा ।।
गवालेर नृप सभाविभूषण ।
पण्डित वाणिसिंह अदूषण २
रुचदेव पर्व्वती सुनामा ।
खगड प्राप्ति तैलिङ्ग सुकामा ।।
महामट्ट नारायण प्राच्यी ।
देवराज मैथिल वरगाची ३
कीरवालिय भूप बड़ आदर।
अहमजाहे उहराय नागर ।
निज समाज महँ ताहि बुलावा।
सकल भाँति प्राप्तार्थ करावा ४

छत्रदेव पर्व्वती पाँच दिन।
करत रहे ग्रभ्यन्तर गिनि गिन॥
एक दिन बोलि मौन मे केरी।
खण्ड पुराणहि करियुक्ति घनेरी ५
सुनि सब लोग एकही साथा।
लागे बोलन गुनि गुनि गाथा।
तब श्री महाराज अस भाषा।
बोलहु एक संग नहिं कछु भाखहु ६
पर जब उत्तर देन महँ कोई।
रुकै बहुरि जनि बोले सोई।
फिरि दूसर पण्डित मनि नागर
बोले तरणा हेतु सुनि सागर ७
इहि विधि ग्रन्थ उत्तर महँ जबहीं
होय एकावट्टहुँ ते तबहीं ॥
फिरि कछु बोला जाय नकबहूँ
कहत विचारि सुनौं बुध सबहूँ ८
इहि विधि होन लग्यो शास्त्रार्थ्थ
पद पदार्थ जोरहहिं यथार्थ्थ॥
जोशिन कहा उत्तर तिन पावा।

सुरत अशुद्ध भये सब दावा ६
अरु तनकाल उतरजब नाही।
दीन सकलसकुचे मनमाही॥
बुधसमाज जब भै इमि मूका।
तब नृपराजतनिकनहिंरूका १०
विजय पत्र लिखि श्रीमहराजहि।
पूजि विदा कीन्ही युतसाजहि॥
क्षिति मराडलमहँ यह परचारा।
प्रश्न उतर नहि विनहि विचारा ११
सभत मनुजहि नीकरुढीका।
चहै पढ़ै वह ग्रन्थन टीका॥
पर श्रीमहाराज कहेवबहू।
मतिनिर्मल तातैं सोसवहू १२
शोचन मत नहीं कछु बाता।
कहत जोय मनु कहो विधाता
राह चलाऊ जो कछु कहहीं।
सबकी दृष्टि न पहुँचे तहहीं १३
कहब काहु सों किमि बनि पर्ई।
सुनिते वचन मनहि मनडर्ई॥

इहि कारण है विजय बड़ाई ।
क्षिति तल मैं सब से अधिकाई १५

## दोहा

ग्वालेर सो जिमि गयहु महाराज नय पाल।
अरु शास्त्रार्थ तहाँ भयहु निहं विधि सुयश हाल १

## चौपाई

ग्वालियर सों श्री महराजे ।
चले जाय नय पाल विराजे ।।
श्री सुरेन्द्र विक्रम अस नामा।
नहें का क्षिति पति पूरण कामा २
तिनको सभा माहिं नय पण्डित।
बहुत प्रसिद्ध प्रताप अखण्डित
वो भागीरथी नाथ प्रवीना ।
अरु केदार नाथ अघ हीना ३
एक कृष्ण बलदायक देवा ।
ये तीनिउ सब शास्त्र कहेवा ॥
न्याय व्याकरण अरु वेदान्ता।
मीमांसा पाठी तु अनन्ता ४
सब पण्डित इक ढाकी नाम ।

भूपति सभा सब भाँति प्रवीना।
बहु प्रकार शास्त्रार्थ करावा।
करत रहे पन्द्रह दिन दावा ॥ ५
परास्त भये परास्त कवीन्द्रा।
गरुड़हि लखि जिमि होत फणीन्द्रा
तब बहु धन दै के महिपाला।
विदा कीन महराजहि हाला ६

दोहा

जिमि पहुँचे नयपाल सौं लखनपुर महराज
सोई अब वर्णन करत सुनियो साधु समाज १

चौपाई

ताजे नयपाल भूमि महराजे।
आय लखनऊ माहिं विराजे॥
ताही समय भूप दरबारी।
नृप वजीर वरसिंह करारी २
रहहिं तहाँ उनके सुस्थाना।
महाराज उतरे सुत माना॥
इहाँ बसत जितने बुध लोगू।
नहिं शास्त्रार्थ करन के योगू ३

परिडत राजा अरु दीवान्।
जो कोउ रहहिं तहां गत मान्॥
धर्म्म कर्म्म अधिकारी लोगा।
लहि सबदर्प्प न होहिं वियोगा४

दोहा

लक्ष्मणापुर सों जिमि गयहु रीवाँ कहें महराज।
अरु जिमि भो प्रणास्तार्थ तहँ वर्णत रवहु करि साज१

चौपाई

श्री युत विप्रवनाथसिंह नामा
रीवाँ भूपति सबगुण धामा॥
ताहो समय रहहिं तासि जागर।
धर्म्म धरीणा प्रताप दिवाकर २
जिनकी परिडत नाई वह भाँती।
अरु परिडत सतकार सुहाती॥
है प्रसिद्ध चारिउ दिशि माहीं।
अस नहिं जन्त जो जानत नाहीं३
इहि कलि युग महँ तासम आना।
गुण गाँहक विचारि गुण वाना॥
भयो नहीं नहिं होवन हारा॥

कहँ लगु वरणउँ करहु विचारा ४
उनकी सभा माहिँ वह परिहत
सकल पराक्रम युत गुण मरिहत
जगन्नाथ पण्डित्य ख्याति कर रहहीं।
जिन सम्मुख कोइ बातन करहीं५
जो बुध जगन्नाथ काशी मैं।
रहहिं प्रसिद्ध मुक्ति दासी मैं॥
निज गुरुहू परीक्षा हेतू ।
बुधन बुलाय कहा उ सचेतू ६
मणिकर्णिका घाट करि बासा।
गङ्गालहरी सहित हुलासा॥
रच्यउ ग्रन्थ युत पद्य पचासा।
जिन्हहिँ पढ़तनहिँ यमकर त्रासा७
प्रति श्लोक एक सोपाना।
गङ्गा चढ़ी सकलजन जाना॥
ग्रन्थ पूर जब भयउ सुरसरी ।
ऊँचे चढ़ि पण्डी पगु परी ८
ये भामिनी विलास करैया
जगन्नाथ पण्डी नहिँ भैया॥

गङ्गालहरी इन्हहू बनाई ।
लयहिं सुजन नहिं करत भुठाई ८
ताहा समय लखनऊसों चालि ।
महाराज पहुँचे राचौं थलि ॥
विष्णुनाथ नृप सभा मँझारी
सिंह समान जाय पगु धारी ८
भूप भेट होनहि तत काला ।
एक बरवा पहि कीन निहाला॥
नीचे लिखवत बाँचि सोलेहू ।
मति अनुसार अर्थ करिदेहू १०

## बरवा

यस्यहृदोऽवनिजातानुनयानु
विष्णुनाथविष्णुवाद्यसत्वाम्यानु ९९

## दोहा

याके अर्थ अनन्तपै सभा बोध के हेतु ।
महाराज जी जो कह्यउसो सुनि होइसचेतु १२
महाराजबोलेसुनहु जगन्नाथ भावार्थ ।
यहि करहम वर्णन करतजोकछु अहैयथार्थ १३
परसुनिये चित्तलाय के जासों असना होय ।

जिमि बन में रोदन किये श्रवण करतनहिं कोय २३

चौपाई

यह कहि अर्थ अरम्यहनीके।
जो सब भाँति अहै विधि ठीके॥
लिखत बनत सोमोसन नाहीं
अरु नसमातहर्षहिय माहीं १४
पर यक भावलिखत सुनिलीजे
सुनिनिजमन गुनि हृदय धरीजे
महाराज वरणी सुनि भूपा ।
यामहिं हमयह अर्थनिरूपा १५
तुम पर दया करैं वै रामा ।
जिनके अङ्ग माँझ सौं वामा।
श्री जानकी कवहुँ नहिं जाहीं
हर्षितहै त्यहि हर्ष कराहीं १६
इमि किमि कहा कहा जिमि अहई
वह यह भाव अहे नृप सहई ।
राजा लोग महीपति होहीं।
अरु सीता महि पुत्री सोहीं १७
वै श्री रामचन्द्र को प्रेरन।

दया करहु नृप पर हिय हेरत ॥
जासों चिरजीव नृप रहई ।
अरु मम माना जो महि अहई १८
सो अहिवाती रहै कृपाला ।
ताके सुख मैं सदा निहाला ॥
यह सुनि सभा चकित भै सगरी
अरु नृप मति डुबि आनँद महँ करी १९

दोहा

जगन्नाथ प्रणमी तबहिं निज मन कीन विचार
महाराज की और अति लयिन्त्य केर प्रचार २०
ऐसी कोई बात हम कहि देवैं ज्यहि माहिं ।
नृप जानै पाखण्ड यह इन महराज कि नाहिं २१
किन्तु काहु आचार्य्य की अगिलेहीं को आहि
ताहि देखि इनहूं कहा या महँ संशय नाहिं २२
यह विचारि महराज तब झुकि कहेहु बुधराज
का यह कोइ पुरान पद है कहिये करि साज २३
महाराज सो तुरत असि उक्ति कहि पहुंचत नीक ।
कही पुराने आइ पद तुम सम भयो है ठीक २४
अब हम यक नव पद कहत ज्यहि सुनिये करि ख्याल

परपुनि अर्थ विचित्र तुमजानिहू जियो विहाल २५
यह कहि श्री भागवत कर पढ्यो प्रथम अपालाक
मन्त्रो द्वार कि रीति पर अर्थ कह्यो तजि शोक २६
जामें निक स्यो नाम प्रभु विप्र वनाथ नृप केर
अरु तिन पिता पितामह कर जो नाम सुटर २७
अरु नृप कुल कीरति परम्परा केहि जोहोइ ।
सेऊ निकरी ताहि सों सुनिहर्षे सब कोइ २८

## चौपाई

देखि दशा यह नृप विप्र वनाथा।
अतिहर्षित भे कहि यह गाथा ॥
महराज नहिं कछु सन्देहू ।
आपुहि केर रचित है येहू २९
जासों वेद व्यास जी मेरे ।
कुल की कीर्त्ति न कह्यो सवेरे ॥
उनकर अर्थ विदित सब काऊ।
सत्य सत्य यह आप वनाऊ ३०
अरु चुप भये सकल बुध तबही।
जगन्नाथ आदिक जो रहही॥
पुनि तद नन्तर सभा समाणी

भो प्रास्त्रार्थ बुधन सों भारी ३१
जो व्याकरण न्याय मीमांसा।
मैं रावन थे पूरण आशा॥
पर सब भये पराक्त तुरन्ता।
किमि पावैं वेइन कर अन्ता ३२
सब भूपाल मौलि महराजहि।
धन मारो नुरगादन्ति युत साजहि
दै पूज्यहु बहु भांति तिहोरी।
जिमि पूजन विधि शास्त्र कहोरी ३३
पर महराज नियम सब काहू।
विदित देत नो होवत लाहू॥
तुरते सब विप्रन दै दीना।
जो तहँ रहहिं बहुत परवीना ३४

## दोहा

ब्रह्मावर्त्तहि निमिरायहु रीवाँ सों महराज।
बाजीराव नृपति सभामैं युत सकल समाज १
भयो तहाँ प्रास्त्रार्थ बहु भांति कहत मुनि लेहु।
गङ्गा दक्षिण कूल पैहै सोनहिं सन्देहु ॥ २॥
रीवांते महराज जब विदा भये तयहि काल

बाजीराउ मरहटा रहैं विदूरि निहाल ३
महान्दपति के निकट सो बहु नामी वुध केर।
होत रहै सत्कार दै मणि धन भूषण ढेर ४
पर चौरासी वुध तहाँ सुर गुरु सम नृप पास।
रहत राघवानन्द सुख सब विधि पूरण आप।५

## चौपाई

उनकी मति पाण्डित्य बड़ाई।
कहहु कवन विधि हम सब गाई
अस विद्या नहिं है जग माहीं
ज्यहि वै वुधवर जानत नाहीं ६
तब विचार किय श्रीमहराजा।
देखिय यह भूपाल समाजा॥
राज सभा महँ पहुँचे जाई।
जो विदूरि मह अधिक सुहाई ७
पढ़ि यक पद्य नवीन अपूर्णा
सुनि आपूरय अति मुदित महीपा
कह भूपाल काह तव इच्छा।
अहै कृपा करिये दै शिक्षा ८
यह सुनि महाराज अस भाषा।

सुनहु भूप तजिकै सब माखा
तुम्हरी सभा माहिं जो पण्डित
सो पुरास्त्रार्थ करै मतिमण्डित ९
बाजीराउ भूप यह बानी ।
सुनि अपने जिय अचरज मानी
कह मम सभा माहिं बुधनागर
कवन चहत पुरास्त्रार्थ उजागर १०
कवनिकवनि विद्या पढ़ि लीन्ही
जो पुरास्त्रार्थ करन मति कीन्ही
यह सुनिकै कह श्रीमहराजा ।
कामरूपवत प्रश्नतव राजा ११
कछु पण्डितन केर काना ही ।
पढ़ा होत पुरास्तर जग माही ।।
प्रश्न होहिं तब और सों सारे ।
उत्तर देत रहव हम भारे १२
नासु उतर नहिं मिलै महीपा
गुनु सो पुरास्त्र न पढ़ा कवीपा
सुनि यह उत्तर अनुत्तरकारी ।
बाजीराव भरी सिसकारी १३

अरु ललकारे सब निज पण्डित
जो सब विद्वन माहिं अखण्डित
तब चौरासी बुध यक ओरा ।
अरु यक ओर बुधन गिरजोरा १४
भो पण्डित्यार्थ इहाँ लगु भारी ।
नृप बुध मूक भये हिय हारी ॥
यद्यपि भूप बहुत ललकारे ।
बोलहु बोलहु मम बुधसारे १६
पर को बोले अरु का कहई ।।
कहु त्यहि उत्तर देत मति लहई ।
जासों मनुज केरि गति भाई ।
मनुजहि सङ्ग होत चलि आई १६
नहि कछु ईश्वर सङ्ग गति नाकी
बरु मति होय सहस बुधवर की
मानी हारि सकल बुधवृन्दा
महाराज तव भयहु अनन्दा १७
विजयपत्र नृपसों लिखवाई ।
बुधन कोविद हिय दीन दिखाई ॥
अरु बहु मुद्रा मणि भूषाना ।

दीन महाराजहि तन काल्या १८
पर श्री महाराज गति वोही।
कीन दीन विप्रन कहँ सोही
तनिक न राख्यहु अपने पासा
कबहु न रहीतिन्ह धन अपारं १९

दोहा।

जिमि विदुरि सों अवध में दर्पनसिंह समाज।
महाराज पहुँचे कहन सुनहु सईकरिमाज १

चौपाई

प्रसिध अवध मण्डल में राजा।
दर्पनसिंह वीर पिरु ताजा ॥
ठनकी सभा माहि दिन राती।
ठाढ राज राजन की भाँती २
सीतारास आदि बुध भारी।
रहत हते त्यहि सभा मझारी
जब श्री महाराजहि नृपदेखा।
अति पाय जन्मसफलकीलेखा३
पूजाकीन भलीविधि लावी।
जिमि पूजनविधि श्रुति महँ गावी

और निरन्तर भक्ति सदाही।
महाराज मैं रही आथाही ४

दोहा

अवध पुरी मौं जिमि गयहु महाराज हरिद्वार
अरु जिमि भो शास्त्रार्थ सह कहत सो सहित विचार १

चौपाई

एक समय श्री युत महराजा।
हरिद्वार जी माहिं विराजा ।।
करन हेतु असनान पुनीता।
जो पुनीत थल श्रुति महगीता २
नृप धरणी धरबुध नयपाली
सहस शिष्य युत वर मति शाली
तीर्थ वास गङ्गा तट करई।
श्रुति चर्चा करि जड़ता हरई ३
करि शास्त्रार्थ कोरि अभिलाषा
शिष्य पढ़ा यहु सोइ मि भाषा।
महाराज हिग सो चलि आवा
निज गुरु प्रणाम मम गुरु हि सुनावा ४
महाराज कह सभानु म्हारी।

हम आउब सब करहु तयारी।
यह कहि नियत समय पर आए।
गयहु सभा महँ तनिक न डराए॥
दर्पनि हेतु नहि बुध धरणीधर।
कीन्ह प्रश्न वर काव्य शास्त्र कर॥
नीचे लिखा वाचि सो लेहू।
कठिन समस्या नहि सन्देहू॥

**वसन्त तिलका छन्दः**

हीरे हरे हिमकरे मकरे करे च॥
कीजे कवीन्द्र कछु वर्णन आपने च
मेरो नुहो कछु अहै वर प्रश्न दूजो।
यासों कहो यह भलो विधि सो जु सूजो॥

**चौपाई**

यह सुनि महाराज अस कह्यऊ।
यहै प्रश्न बुध वर जो रह्यऊ॥
नो व्याख्यान करन हम भारी।
सुनिये सकल विचारि विचारी॥
यह कहि लाग्यो करन बखाना॥
सत्ताइस दिन लौन सिराना॥

भावविलक्षण कह्यो अनेका।
बुधन वदन पर दै दै छेका॥ ८।
धरणीधर आदिक जो नहूंवाँ।
हे महात्मा सबगुण गहूंवाँ॥
सुनिकै चकित भयेत्यहि काला।
बोलि न पूरके मलीनबिहाला १०
छोटे बड़े रहे जो कोई।
वाह वाह सबके मुख होई॥
अहाइसयें दिन धरणीधर।
कीनविनय बहु भाँतिबुद्धिवर ११
अरु पुनि दुमि भाषा करजोई।
महाराज तुम सम नहिं कोई॥
तुम रवि सम हम बालू रेनू।
तुम्हरेहि तेज प्रकाशित ज्ञानू १२
तव अपार गतिहै किमिवरनी।
यकसे मौ असङ्ख्य वरकरनी।
सबसामर्थ्य आपु महँ आई।
मम धृष्टता क्षमियबुधराई १३
अब व्याख्यानसमाप्त करीजे।

विजय पत्र हम सों लै लीजै ।
यह कहि लिखि जयपत्र निहोरी
दीन महाराजहि कर जोरी १४
तब व्याख्यान समापन कीन्हा
महाराज त्यहि निज वपु चीन्हा
लवटि उहाँ सो पुनि उहँ आये ।
जहँ सों ग्रथमहि उहाँ सिधाये १५

## दोहा

जनक पुरहि जिमि गयहु श्रीमहाराज घटि ठाट
अरु जिमि भो पुरास्वार्थ सो वरणति मुनि करि चाट १

## चौपाई

जनकपुरी में एक अति बूढ़े ।
पण्डित रहत कहत मत गूढ़े ॥
उनसो सप्ताह्स दिन जाई ।
भयो महा पुरास्वार्थ तहाँई २
जो कछु कह्यो महात्मा सोई ।
महाराज खण्डन किय कोई ।
महाराज जो जो कछु भाख्यो ।
अपनी कोटि बराबर राख्यो ३

यह कहि विजय पत्रलिखदीन्हा
महाराज लेगमनसुकीन्हा १३

दोहा

अवधपुरीमैंजिमिकियो अचल वास महराज
सो अब वर्णन करत सुनि लीजेसुजनसमाज १

चौपाई

इन्हैं छोड़ि प्रागल्भार्थ बहूता।
भयेसकलविधि सों मजबूता॥
नदिया प्रान्ती पुर अरुव्यतिया
दरभङ्गा जयपुर बुधपतिया। २।
योधपुरादि अनेकन भूपति।
सभामहिंप्रागल्भार्थसहित यति
नानाविधि भैविजय बड़ाई।
सुयश भलीविधिजगगुरु पाई३
कापीजीसें पश्चिम ओरा।
कोपादपाक परथलयकदोरा
गधिया नाम अहै अति नीका।
तहवसु महादेव बुधटीका ४
उनसे परमहंस वर राजा।

राम निरञ्जन स्वामी भाना।
अरु श्री महाराज जी दोई।
कछु दिन पढ्यो रहैं नहिं गोई ५
सब कहुँ फिरि फिराय महराजा
आयहु नासु दर्पु के काजा ६।
वै श्री महाराज वर केरी।
मति अपार गाम्भीर्य्य घनेरी ६
वर औदार्य्य सुपील आदि गुन
लखि अति मुदित भये अरु सबसुन
बोले फिरब फिराउब तब तक।
पाई कछु काहू सों जब तक ७
अरु जब कछु काहू सों नाहा।
मिलत आपने देत पराहीं ८।
तब सुस्थिर ह्वै कै थक ठाईं।
बैठब चही भमरा काहुँ नाहीं ८
जो यह कहहु कि देने देना।
केवल नहिं कछु लेना
कहै तो कबहुँ काहु मिलै आइहि
तब वाणी विलास किय जाइहि ९

ताकर हाल सुनहु यह अहई
हम देखा वहु कछु मन लगई।
सब कछु है वुध यह संसारा।
परन्तु म सन नहिं बोलन हारा १०
भल खराउ मैं है नहिं होई।
चाहै गाल बजावै कोई ॥
नव अवतार रहिउ इहि माहीं
उपमा रहित है सम्पय नाहीं ११
अब कहु अचलवास करिनी के
निज भावना काम करो ठीके।
अरु विप्रन्ह कहँ विद्या देहू।
सुयपूी अधिक सुयपू लैलेहू १२
यह सुनि विन्ध्याचल परगयऊ
विन्ध्येश्वरी दर्शन शुभ कियऊ
वहँ यक पत्रलिखित परदेखा
देवी आज्ञा निज पहँ लेखा १३
तुलसी दास कवित यक वा मैं
लिखेा हतेा आपुय यहं नामैं
रघुनन्दन महँ नहिं न्यूहू नेहू।

वृथा जिन्ह जग मो धरि देहू १४
यह विलोकि श्री अवधहि आये
रघुवर मैं निज भाव लगाये ॥
अष्टादश प्रशस्त वहुरि तिरासी
सम्वत मैं भे अवध निवासी १५
इह कृष्णा प्रशस्ती रवालेरी।
आये जिन मतहस्ती घनेरी।
नदिया प्रशान्ती पुरी गोपाला।
भोद भट्ट आचार्य्य विशाला १६
वहुरि अनन्ताचारी आये।
वट हिनाथ मैथिल मन भाये॥
सिद्धिनाथ द्वारकनाथो भा।
येऊय जनक पुरी केवो भा १७
पुनि काशी वासी वहुतेरे ॥
श्री रामोपाख्यानी वुध सेरे ॥
मुन्नू व्यास विदित सर प्रशस्ती
कासि जिन्ह स्वामी वरगाची १७
वहुरि देशदेशान ने प्रशस्ती।
आये नेकन विद्या पाची ॥

बूडैं असमञ्जस यह बात मान २८
महराज छात्र जो अतिहि छोट
न्यहि सग सुबुद्धि की भरी मोट
नहिं बोलि याके तासो कवीन्द्र
समुझै अपने मनवरु सदीन्द्र २९

## चौपाई

पण्डित सार्व्व भौम यह नामा।
महाराज कर है गुण धामा।।
यासो काशी अरु नय पाला।
काश्मीर जहं बसु बुध जाला ३०
नदिया प्रान्तो पुर पण्डित घर।
इन्है आदि नहं है प्रस्तर।।
जहं कछु वाद विवाद प्रारम्भ कर
होत तहां सो आवत बुधवर ३१
अथवा निज निज पत्र लिखवाई।
पठवत अहैं अवध कहं धाई।।
सभा मध्य निर्णय दिन राती।
होत हस्त लिखि उत्तर पाती ३२
चली जात सबके ढिग काहीं

जो यह आवत सुनत यहाँ ही।
इहै एक अद्भुत नहिं कामा।
सकल कार्य्य है अद्भुत सामा३३
अरु संसारी उपमा हीना।
किमि वर्णौं कोइ लोग प्रवीना।।
रामजानकी नवमी माहीं।
जिमि उछाह कहि जात सो नाहीं३४
माघ शुदी पँचमे सो होई।
होली उत्सवतनिक न गोई।।
चैत्र पञ्चमी लगा सो रहई।।
यह उछाह किमि को कवि कहई३५
यामे भूषण वसन अनेका।
सेवक छाक लहहिं बिन छेका।।
नृत्य गान बाजन अरु रङ्गा।
धूम धाम मनु सैन्य अनङ्गा३६
वर्णनीय जहि सो उत साहू।।
दर्शनीय देखहु सब काहू।
प्रति दिन बढ़ई मन उमड़ि जाई।
अवि पुलालनतनिक भुलाई३७

नवबजि भरत रहत दरवाजे।
समय समय पर करि सब साजे॥
सकल बाद पूगही है ठाटा।
देखहु जाय चहै ज्यहि बाटा३८
मुन्शी दारोगादिक जेते।
अधिकारी शुभलक्षण सेते॥
धर्ममूर्ति सुशील अरु ज्ञानी।
है सिंगारे किमि कहौं बखानी३९
निज निज कार्य्य करत सबनी के
कबहुँ न रहत चित्त मौ फी के॥
आज्ञा होत जाहिं जो कोई।
मनहुँ प्रथम वैसरवत सोई ४०

## हरिगीतिका

जय भद्र काली प्रताप मुन्शी सम सुलेखक ना कहूँ
शिवदित्त राम समान नहिं मीनमान दारोगा वहूँ
बुधलेम करण अमित्र कवि हरवत देर न लावहीं
मथुराप्रसाद कविन्द आदि सभा युक्ति लखावहीं ४१

## चौपाई

कहँ लगु सबके गुण अरु नामा

लिखेजाय सबविधि शुभ धामा।
जोवहँ रहन करत शुभ कामा।
नासभ अपर कोरिनहि सामा४२
हाथी घोड़ ऊँट वृषभादी।
धेनु छाग वरमेष सुवादी।।
शुक शृगारिका आदि सबजीवा।
शुभ भोजन लहि प्रमुदित पीवा४३
बन्धन कामतिन्हें कछु नाही।
ज्यहि बर भोजन लहत सदाहीं
जानत बहुरि सदा मन माही।।
टहल न लेहुहि कोऊहम पाही४४
अरु नकबहु नीचे कहं जाना।
होइहि सकल भांति कल्याना।
जबत कजिअबहुबतवनाही
जीवन मुक्ति कछु शक नाही४५
अन्तकाल लहि मुक्ति विशेषी
बिचरवहरि पुरसब सुख पेखी
यहे सत्य नहि कछु सन्देहू
महाराजदर्शनजिन केहू ४६

मानहुं सकल देव तिन पूजा ।
अब करणीय रह्यो नहिं दूजा ।।
अरु महराज कमल मुखवानी
सुनी भाग्य वपु जोनगा प्रानी४७
मानहुं सब श्रुति शास्त्र पुराना
अवरा महात्म लह्यो विधिनाना
अरु महराज चरणा की सेवा ।
कीन लह्यो मानहुं सब मेवा४८
कबहुं मनोरथ करत न सोई ।
सुरपुर बसन केर नहिं गोई ।।
सकल स्वर्ग सुख त्यागि पहिचाई
करि विश्वास मन कहुं चित माई ४९
श्री महराज कृपा अवलोकू ।
सकल पदारथ देत न पोकू ।।
अरु को होत न दाहिन ताही
कृपा दृष्टि देख्यो गुरु जाही ५०
चाण्डालहु धर्मात्मा होई ।
मूरुख पण्डित होत न गोई ।।
कृपण उदार होत क्षण माहीं

सत सङ्गति गनि विदित सहाही ५१
तुलसीदास सुकविजस लिखई
दोहा माहिं सकल जन शिखई ॥
आगे लिखत देखि सो लेहू।
तिन्हहिं कैरि नहिं कछु सन्देहू ५२

## तुलसीदासजीका दोहा

सात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुलाय एक अङ्ग-
तुलै न ताहि समान मिलि जब निमेष सत सङ्ग १

## चौपाई

यह आशय महराजहि केरी
सत सङ्गति मैं प्रीति घनेरी ॥
परनहिं सबहि सुलभ यह भाई
जापर श्री रघुवीर सहाई ५३
बहुत नहे पढ़ि सुफल निजनयन
करत सदा तिन मनकरि मनन ॥
नरहि चहीं निज जन स्वारथ हित
अति चाहना करैं कै चित ५४
करत नहिहिं चाहन जो कोई।
अवशि लहा नहीं पहे चिहि नर सोई।

दीनदयालु अतिहि महराजू।
अन्तर्य्यामी बुध शिरताजू५५
सबहि कहे बिन सकल मनोरथ
देत न तहँ उनकर कछु सोरथ
दानिन मैं बिन श्री शिवजी के।
ताकी उपमा नहिं यह ठोके५६
दानि शिरोमणि कर्ण भुआला।
लिखत सदा कविजन की माला
उनके दान प्रशंसा भाई।
केवल तीनि बात मैं आई ५७
प्रथम बात यह है तिन केरी।
जो दरिद्र आवत त्यहि हेरी
उठि कै मिलत प्रेम करि नीके
नहिं दुराव राखत कछु जी के५८
अरु दूसरि यह बात बखानी।
जो दरिद्र माँगत कहि बानी।
दूनातुमु देत तत्काला।
तासो सो है जात निहाला ५९
बात तीसरी यह तिन केरी।

दीनहिंदै कछु कहत न फेरी।
जबवह चलत जात कछु दूरी।
त्यहि पछुचावन छोंड़ि गरूरी ६०
अरुहै भाव इहाँ यह भाई।
तनिक कहत नहिं बात बनाई
सुनि दरिद्र कहँ तो घर माहीं
पठवत धन त्यहि कछु थम नाहीं ६१
बात दूसरी यह इहँ केरी।
जो आइनि परु याचक फेरी
कहे बिना त्यहि करत अयाची।
सबविधि बात अहै यह साँची ६२
तीजी बात एक ज्यहि चाही।
त्यहि प्रान देत समुझि मनमाही
चौथी यह कि देत एक बारा।
त्यहि त्यहि सदा देत सविचारा ६३
अरु पाँचई बात यह नीकी।
दा अक्षा तजि ना नहि टीकी॥
बार बार चहै याचक याचै॥
देहिं प्रेम हीं सों यह साँचै ६४

कल्पवृक्ष दूजो बड़ दानी ।
लिखा जात यह सबजग जानी
नियम नाहु कर इहाँ अभाऊ।
वह माँगो पर देत सदाऊ ५
शुद्ध अशुद्ध मनोरथ केरा।
करत विचारन निज मनहेरा।
इहाँ सकल पावत बिन माँगो
अशुध मनोरथ नहिं त्यहि आगे ६
फिरि किमि देहिं अशुद्ध पदारथ
जानत हैं सब शास्त्र यथारथ।
जो विचार कीजै यह भाई।
इतना धन कहँ से तहँ आई ७
काहे से कि नियम यह अहई।
श्री महराज केर बुध कहई ।।
मनवचकर्म न करत उपाई।
धन हित यह जानत सब भाई ८
तो विचार करिये किमि पानी
आवत नदि नाहिं जल जानी
अरु नल जलद कहाँ सो लावत

धरणी नाज बहु किमि उपजावत ६८
जिमि जग हित श्री राम कृपाला
सब पहुँचावत दीन दयाला।
तिमि पहुँचावत प्रति दिन तहँ कै
समझहु सुजन बहुत का कहऊँ ७०
करुणा कल्पलता स्तव एकू।
शुभ सुन्दरी छन्द महँ नेकू॥
महाराज रघुवर पाहीं ७१॥
कछु निज भाव कह्यो त्यहि माहीं ७१
ताके एक पद्य कर येहू ।।
है शुभ अर्थ जानि बुध लेहू॥
श्रीयि श्री राम बिना नव दाया।
वसुन्धरा निज नाम भुलाया ७२
यद्यपि सत्य नाम यह नासू ।
वसुधा जहँ कछु मृषा विलासू
वसु कहे धन जहँ धरै जो कोई।
वसुधा तासु नाम फुर होई ७३
पर न करहु मोपर तुम दाया ।
त्यहि न देत सो कछु रघुराया॥

जापर दया करत तुम नीके ।
कामधेनु ताकहँ सोठीके ७४
यह लखि कोपत हृदय हमारा
करत दिवानिपुि यहीविचारा॥
मेरी मुक्ति कवनि विधि होई ।
दान नियम निबहिहि किमि सोई७५
इमि न होय की कछु निज दाया ।
करहु कबहु मोपर रघुराया ।।
अरुमम निकट आव कोऊ भूखा
लवरि जाय लहि के अति दूखा७६
जो कोइ कहै कि नहिं विन दीने ।
मिलत कछू बेनाहि प्रवीने ।।
कहहु वि भीषण और सुदामा
कब कहि दीन नगर धन धामा ७७
जासों लह्यहु नगर वर दोऊ ।
जिन लखि लजत अमर पुर सोऊ
इहि कारण उहँ सब कछु रहई ।
कछु कउपाय करत नहिं एई७८
केवल एसहि करत उपाई ।

(मलूक)

मनुज किहे काहेन भलाई॥
नाम्ह विनु सहायइमि गाये।
वनतकबहुँ कछु नाम्ह सहाये २६
जासौं श्री महराज गोसाईं।
निजकुमार वय सौं सबठाईं।
याचक सौं न कह्यहु ना अक्षर।
निवहत सदा सुखहि सौं वासर २७
अचरजहीन देखि नर काहीं।
गुनत रहत अपने मन माहीं॥
यकदिन अवध नृपति पुरभनामा
मानसिंहमति वर गुणधामा २८
श्रीमहराज निकट ये वैठे ।
सन्ध्या करण हेतु गुरु ऊठे ॥
तनिक चरण लखवहै परयऊ
अवध भूप तब पूँछत भयऊ २९
कारण कवनि चरण परुढीला
दारोगा बोल्यो पुनि गीला ॥
आप भली विधि जानत अहई
जो कछु नियम इहाँ करहई ३

आज पाँच दिन भे महराजू । ।
जलकु न पियकु बनै किमि साजू
द्विज अभ्यागत साधन काहीं।
दीन सैकरन मुद्रा आहीं ८४
अरु अपना फलहारउ नाहीं ।
करत रहत यह धनि मम याहीं
सकल देकु दीनन्ह कहँ भोजन
हमसे अवनहिबकु तप्रयोजन ८५
यह सुनि अवध भूप बकु सोचे।
निज मनमैं बकु भाँति सकोचे
तब श्री महाराज फिरि आये ।
तब बोले करजोरि सुहाये ८६
मोहिं एक लागयकु बड़ पापू।
प्रायश्चित बतलाइय आपू ।।
धर्म्म शास्त्रमें बकुत्य कदेखा।
प्रायश्चित नत्याहि करपेखा ८७

दोहा

यह सुनि श्री महराजकह कहत क हौभूप
सत्य सत्य यह बात है तौ कछु होइ स्वरूप ८८

## चौपाई

यह सुनि मान सिंह नृप बोले।
वचन सुधा सम अति हि अमोले
अवध पुरी के हम हैं राजा ।
नृप के धर्म्म कहत का साजा ८६
जासु राज्य महँ प्रजहि कलेशू
होत सो पापी होत नरेशू ।।
अरु जहँ विप्रहि होइ कलेशा।
त्यहि क्षिति पति कहँ पाप हमेशा ८७
अरु जहँ विप्राधिप गुरु ज्ञानी।
जगत पूज्य ईश्वर सम मानी ।।
कष्टित होहिं नहीं कर पापू।
है अथाह यह वेद अलापू ८८
अरु नहिं प्रायश्चित कछु तासू ।
लिखा वेद हम कीन तत्तासू ।।
वह पद वेद लिखित अब बाचा।
मोरे समय भयउ सो साँचा ८९
मोरे राज्य माँझ सो आपू ।
कीन गुणा सकरौं का जापू ।।

इमि सुनत वचन सुनत महराजा।
बोले सुनहु मुणिराजा ॥३
जो आरम्भ हम तुम्ह यहि राजा।
करिति उपास करकरि साजा॥
अरु जो तासों हमहिं कलेषू।
मिलत मिलत अघ तुम्हहि नरेषू ॥४
अरु जब ये बातैं नहिं दोऊ।
तौ किमि दोष तुम्हें कह कोऊ।
देखहु नियम उपास करन कर।
हमहिं सदा सो आइ बुहिवर ॥५
जो प्रबन्ध किय चहहिं कुवेरू।
तौ न होय निज मन हम हेरू॥
दूजे प्रतिक्षण होइ सुखारी।
इहि उपास सों कहत विचारी ॥६
या महिं तुम्हहिं न दोष कछु चाही
जन्म स्वभाव मोर यह आही॥
जो कछु होय भ्रात को दीजे॥
भोजन सों नहिं हर्ष करीजे ॥७
केवल सो गुण निर्व्वाह।

भोजन सों नहिं दूसरो लाहू ।
ज्यों ज्यों धन दै कैहम रखवाली
होत अहै त्यों त्यों सुखहाली ९८
मुदितहृदय फूलत तिन मेरो ।
भरत जात अरु हर्ष घनेरो ।।
अरु धनहूँ भरते चलि जाई ।
घटत दिये नहिं राम सहाई ९९
यह महात्म्य राम जू केरो ।
जो सम तन धन मिच्च बडेरो ।।
इष्ट सकल विधि हैं न संदेहू
कृपा दृष्टि राखत गुनि लेहू १००
रखवाली भरत रहत सब काहो ।
है स्वभाव उनमें सुनु भाई
एक दिन बाल अवस्था माहीं
निज कोउ पर चढ़े उछाहीं १०१
अहो करो रिन मुद्रा केरे ।
सीसा झाड़ फनूस जडेरे ।।
त्यों हि लरिवे निज कर कमलन दाई
चाँदी गोला मारयउ धाई १०२

शब्द भयउ झुझकुन सुनि आए
भये मुदित मन नहि कछु दाए॥
गोले मारि मारि बहु तोरे ।
सीसा झाड़ आदि सुख बोरे १०३
दास एक त्यहि अवसर धावा
कौशल्या सों वचन सुनावा॥
जो मणि सम प्रकाश के सीसा
राजकुमार राम करिईसा १०४
चौदी गोलन सों बर जोरे ।
निज कर कंज चलाय के फोरे।
यह सुनि कौशल्या महरानी
निज गलहार दास दै मानी १०५
अरुन्ट पद प्रणय सों कहिनीके
आज्ञा करवाई विधि ठीके॥
सबहि रत्न धनजात दे हु आजसब
सकल लुटावहु रुकहु न मन अब १०६
रघुनन्दन यह आजु उछाहू ।
कीनन धन राखहु अब काहू॥
यह कहि सब धन दीन लुटाई

दम्पतिहर्षनहृदय अमाई १०७
जबरघुबरदेख्यो यह हाल्ला ।
जननीजनकहर्ष धन माला ॥
दीन लुटाय खजाना रीते ।
भये सकल नबलख्यो पिरीते १०८
भये कोपु पूरण सब आसू ।
रामहृष्टि पुनि कहँ न सुपासू ॥
वही रामजू निज उर साहू ।
प्रति दिन धन लुटवन सबकाहू १०९
अरु पुनि भरत हृदय नित सोहू ।
हम सों भूप काम नहिँ कोई ॥
यह सुनि भूप चय रहि गयऊ ।
दारोगा सों पूँछत भयऊ ११०
आजु खर्च दुपहर लगा केता ।
भयऊ दरोगा कहऊ सचेता ॥
साढ़े बासठ मुद्रा केरो ।
तबलग खर्च दीख हेन मेरो १११
कहचित सों हम का कोउ नाहीं
खर्च थोंभ शुकिहै एक जाहीं

परहमसब लोगान की हारा ।
जो कछु धन कर होत सहारा ११२
सो भलहोत बात यह भूपा ।
निज मन माहिं रहै अनुरूपा ॥
जब सुधमा पुर मैं महराजा ।
गवरन जनरल आय विराजा ११३
कीनसभाजा मैं सब भूपा ।
अवध मराडली के शुभ रूपा
भेयकच अरु भई कुमेटी ।
कमिनब मानसिंह नृप फेंटी ११४
एक पत्र पर सहस पचीसा ।
लिखवायो मुद्रा जस हीसा ॥
महाराजहित वार्षिक दैना ।
सबन महीपन के मन चैना ११५
अरु लछ सहस कर यक ग्रामा
आपुदीन करि भक्ति विधि सामा
अर्घ्य कुराड दक्षिणा दियो सोई ।
ग्राम चहै देवकु नाहिं गोई ११६
अस सब ते अर्घ्यो महराजहि ।

जबसे सब रूप करी निज मानहि
नियत समय पर निज निज मुद्रा
पढ़वत हैं न करहिं मन सुद्रा ११७
यह जानि शिवाजय पुर बासिया।
आदि बुझत हैं जो रज धनिया॥
यही भांति वार्षिक बहु आवत
ज्यहि लखि कै सब लोग सिहावत ११८
यह आमदि देखत बहु लागै।
महाराज हिय हैं मनु पागै॥
जो प्रति दिन आवत डमि भाई
दूजे दिन नहिं परत लखाई ११९
अरु महाराज नियम हू येहू।
जो आवै देखहु न धरे हू॥
जब सब याचक होत अयाची
तब फलहार करत मनराची १२०
यहि कारण जब परयहु अकाल
सत्ताइस उपवास कराल्।
दैव योग से भे महराजहि।
रहे पढ़ावत छात्र समाजहि १२१

अरु पात सहसन मुद्रा दीन्ही
चित्त विकल्प तासु न कीन्ही
मानुष भाव होत जो काऊ।
किमि सन्तुष्ट रहत चित चाऊ१२२
नवहू की सि वीत दिन जाही।
कान उपास कबहु नर काही
फूटत आँखि जान सब काहू।
बहुत कहे नहिं है कछु लाहू१२३
अरु जो धर्म्म प्रशंसा रापूरी।
महाराज मैं होत अकापूरी॥
नहिं गिन सो तिनकी करियाकई
वहै यत्न कोटिन नर करई १२४
कहनेवाला एक रीति से।
कहत भली विधि चित प्रीति से।
पर जो उपमा रहित लखाई।
ताहि किमि कहै बुद्धि कहुँ पाई१२५
यासों तुच्छ जीव मैं भाई।
कहि न प्राकृत नगगुरु प्रभुताई
जिमि कछु समुझि परानि मभाषा

गुरुपद्धा कहनेकी अभिलाषा १६

## दोहा

श्रीहरिवंशदासुपति जिमि श्रायहु साकेत ।
नवमन्दिर रचवाय किय श्रीमहराजनिकेत १
वर्णन मैं श्रवसो सुनहु दैके श्रवण सुजान ।
जानन्हो वलराम पुरन्दर न्यहि भाँति महान २

## चौपाई

जब श्री महाराज साकेता ।
श्रचल वास कीन्हो जगहेता ।
बाँगला वेगम माहव केरी ।
जोतिन बागहि माझ बनेरी ३
प्रथमनहैं उतरे बहु कास्ता ।
रहे जनन को करत निहाला ॥
पाठन पठन बहुत दिन ताईं ।
होतरह्यो न्यहि मन्दिर माहीं ४
राजा बाबू आदि घनेरे ।
श्रावत दर्शन हेतु बडेरे ॥
एक समय महराजाधिराजा ।
भूपशिरोमणि सबगुणभ्राजा ५

श्री बलराम पुराधिप आयु ।
श्री दिग्विजय सिंह राज पायू ।।
अवधहि आयहु सहित समाजा ।
राम नवमि महँ करिहव साजा ई
दर्शन पर्शन सब करत विशेषी ।
महाराज हिय गे गुण पेखी ।।
दर्शन कीन्ह जन्म फल पावा ।
रूपनि रहौं बहु विधि चित लावा ।
ऊहां बहुत विधि बात मनोहर
होन रहत नो मजुजहि गोहर ।
सुनि प्रसन्न भे भूपशिरोमणि
करि प्रणाम रामने सब शुभ भणि ।
चले जात मग मन्त्री लोगा ।
बोले सुनेय महीप सु योगा
सब राजा लोगन के मन्दिर ।
हरि मन्दिर शिव सदन सुचन्दिर ।
बने इहां एक आपहु केरा ।
बने विश्रुगृह सु यश घनेरा
यह सुनि कह रघु एक बनवावैं

कीदश्ए वीप्रा लक्ष्य सजवावै १०
सुनिइमि वचन महीपतिकेरे
चुप ह्वै रहे सकल हिय हेरे ॥
जाना न्रृप के मन नहि माना।
जोहम लोगन कीन बखाना ११
वक्र वचन भाख्यो महिपाला।
निज निज मन गुनि भये बिहाला
न्रृप कह तुम उत्तर किन देहू
पूछत हैं हम सत्य मत्य येहू १२
एके बदन वार्ये वा हेरे ॥ ॥
दश विप्रा लाख कि औरघनेरे
उत्तर देहु सकल जन दीजे।
सुनि मम वचन होहु जनि खीजे १३
बोले सब सुनि ये महराजा।
बचन गँभीर आप कर आजा।
यहि कर आपुन यज्ञ हम लेखा
मम मख को दिन करत नियोगा १४
सत्य वचन कहिये करि नेहा।
उत्तर देव यहि कछु सन्देहा॥

नव रूप कह्यो ब्रह्म वैवर्त्ती ।
जो पुराण वरहै अघहर्त्ता १५
नामै महा देव जो भाषा ।
इष अघ लोक उमा की साषा ।
तिनकर अर्थ सुनो चित लाई ।
सुनि चित माहिं लेहु ठहराई १६
जो कोई मन्दिर वनवाई ।
विप्रहि थापत नेह बढ़ाई ॥
एक लाष हरि मन्दिर ओहू ।
दश सहस्र शिव सदन सुपोहू १७
मन्दिर दीन वनवाय जो प्रानी ।
यह मम वच सुनु उमा सयानी ।
थापे विप्र प्रसन्न बहूता ।
परमातमा होत अति पूता १८
परमात्मा प्रसन्न जब होई ।
तब मैं शिव प्रसन्न नहिं गोई ॥
जब प्रसन्न मैं होत भवानी ।
सब चर अचर प्रसन्न जानी १९
यह सुनि धन्य धन्य सब कीन्हे ।

महाराज मुनि अति सुख चीन्हे।
कीन अरम्भ त्यहीक्षण राजा।
मन्दिर बनन लाग युत साजा २०
अस्सादप्पा सहस्र सौं नीका।
मन्दिर बन्यो सकल विधि ठीका।
सर्वविधि पूर्व्वक श्री गद्दिपाला।
परिडत राज कृपालु दयाला २१
गुरु नारायण तहँ अस्थापा।
प्रथम बुधन जहँ वेद अलापा।
साठि अधिक शत चय प्रतिमासा।
मुद्रा पठै देत गुरु पासा २२
अरुलनाथ नाम शुभ गायक।
जासु गान सब दे पूजा सुहायक।
सौंपि दीन गुरु कहँ धरणीप्पा।
अरु कहँ ले महराज अशीसा २३
सेय चरण जलजात स्वजन नृ।
कल्पद्रुम फल गुण गण कलभनन
त्यहि श्री महराज दिय आयसु
कनक भवन महँ नित चलि गायसु २४

श्रीरघुनाथहि गान सुनाई।
आवहु इहाँ न कछु दुचिताई
नये घाट पर मन्दिर सोई।
विद्यमान है नहि कछु कोई॥५
जामैं श्री महराज विराजत।
पास सदन पुनि बुधजन राजत
सदनन्तर भनगा को रानी।
मन्दिर एक रचायहु आनी॥६
यहत्यहि सदन दुवेनरिपुमाहीं
त्यहीलगनि करहै शाकनाहीं
या मैं श्रीगुरु सदन विहारी।
ताकुर विहरत प्राण धनु धारी॥७
ज्यहि बँगला सैं प्रथम निवास
रहत रहे त्यहि निकट विलास
सरसरिन्त्यति रचना श्रीमन्दिर
बनवायो एक सबनिधि सुन्दर॥८
अतिविचित्र रचना त्यहि केरी।
सभा प्रभा ज्यहि माहिं घनेरी।
लघु लघु मन्दिर बहुन तहाँहीं

कहँलगुकहौं गुनौंमनमाहीं२६

## दोहा

न्यहि विधि श्री महराजदिय इन्द्र-राजपतिकाहिं।
श्री महन्त पदवी स्वई कहत गुनौंमनमाहिं १

## चौपाई

पुनइससै ग्यारह के संवत।
अवध पुरी मैंविप्रनसम्मत॥
अरु वावन महन्त बड़ नामी।
निज सम्मति सोममगुरु स्वामी२
निज मध्यम भ्राता विद्या पति।
तिनके जेठ तनय अतिवरमति
इन्द्र-राजपति जीव न्यवारी।
जो सब भांति कुशल अधिकारी३
राज्य योग सब गुणा न्याहि माहीं।
न्याहि महन्त कीन्हो निज याहीं
अरु जे वेद त्रयी अधिकारी।
तिनविप्रन यहि मन्त्र करणी४
कीन भूप अभिषेक भली विधि
अरु सबमिलिदुषनामदीन्हसिधि

तब से बहुत भार गुरु केरे ।
लीन महन्त उठाय बड़ेरे ५

## दोहा

स्वस्ति श्री श्रीमन्त श्री महो महा महराज ।
श्री मच्चक्रवर्त्ती सुत दिनकर भासम भ्राज ई
श्री मद्रामकृष्णचन्द्र गुरु मित्र सभासद् पेन्द्र ।
श्री परिहतराज्य पति श्री विपाठि जी मेन्द्र ७

## चौपाई

वहि राज्याभिषेक महजा विधि
पूजन पुत विधान भो सोसिधि
श्रु जो दान दक्षिणा दीना ।
लिखा जाय किमि सकल प्रवीना८
श्री महराज केर सब कामा
श्रड्डुन होत सदा सुठि सामा
श्री मद्रङ्गराज पति सबसे ।
हैं महन्त पदवी परढवसे ९
यहि अभिषेक केर विस्तारा
सेमकरणा बुधसहित विचारा
श्री गुरु कथा ग्रन्थ महलीखवा

लखहिं सुजन चाहैं जो दीखा १०

## दोहा

एक महात्मा दक्षिण से निकट आय महराज
यक भाषा चौपाइ कर नवहिं अर्थ समाज १

## चौपाई

एक समय दक्षिण सों एका
अति प्रसिद्ध वैष्णव सविवेका
आये अवधहि दर्शन हेतू ।
करि सनान सो भये सचेतू २
सकल महन्त अखाड़न माहीं
दर्शन पर्शन गये तहाहीं
जहँ श्री पण्डित राज विराजे ।
तहँउ दर्शकरि सहित समाजे ३
अति विनीत ह्वै उठि कर जोरी
कह महराज अभिलाषा मोरी
है यक बैन कहत बनि आवै ।
आज्ञा होय तो दास सुनावै ४
श्री महराज कह्यो का कहऊ
बेढ़ब सुख पूर्वक बुध अहऊ ॥

जो कछु कहन चहहु मुखसेती
कहहु महात्मा जीव सचेती ५
यह कहि सम्मुख लीन बिठाई
कह्यो महात्मा जीव दिढाई॥
महाराज मैं अति चिरकाला
महि पर्य्यटन करत गत जाला ६
परिडत और महात्मन पाही
पूछत आवत हौं सब काही।
तुलसी दास सुकवि चौपाई।
भाषा ग्रन्थ कीन सब ठाई ७
परन यथेष्ठ तृप्ति भै मोरी।
वह चौपाई यह है अधोरी।
वन्दौं राम नाम रघुवर को॥
हेतु कृशानु भानु हिमकर को ८
सुनि हर्षित ह्वै यो महराजू।
बोले त्यहि सराहि करि साजू।
अये महात्मा जीव गुसाई।
यहि चौपाई माहि बनाई ९
राम नाम की कीन वन्दना।

(८८)

ग्यहि विस्तार चारि श्रुति भना ।
अरु ठा प्रास्त्र पुराण अष्टदश ।
वर्णति लहत न पार कहैं कस १०
पर कछु तव प्रसन्नता हेनू ।
कहत सुतो तम भो कास्चित्
यह कहि त्यहि चौपाई केरे ।
नव दिन लगु कह अर्थ घनेरे ११
सुनत महात्मा जीव अघाने
दण्डाये दिन डेमि कीन वखाने
महाराज तव कृपा कटाक्ष ।
अति कृत कृत्य कीन मोहि आज १२
पर यह सोच बड़ो मन माहीं ।
मम मति मन्द गहत कछु नाही
या कर कछु भावार्थ न तेही
यादरहिहि दूषण बड़ येही १३
कछु कलियुग पढ़ि व्याख्याना की
कहत लगालिगवै रही सबबाकी
गयउ चले निजदेश वरवानत
मम पुरु सुयश सुमति अनुमानत १४

## दोहा

परिडत राधाकृष्ण पौराणिक ह्वै के हेतु।
जिमि सत्ताइस ग्रन्थ मिल कृष्ण शब्द कहिदेत १
वर्णन सो सुनियो सकल परिडतराज सचेत।
श्रीमहराज कृपायतन कृत मदे पर हेत २

## चौपाई

परिडत राधाकृष्ण पुरानिक।
हते प्रसिद्ध पुराण्य मणिखानिक
जिनके तुलाराम पितु भारी।
भगवत प्रसिद्ध अधिकारी ३
जिन सम कथान वाँची काहू।
सुनि कहै बुध सबै मन माहू।
वै श्री राधा कृष्ण प्रवीना।
महाराज हिग गे लवलीना ४
अरु श्री मद्भागवत हि केरे।
दशे स्कन्धाध्याय सतेरे।
कृष्ण चन्द्र अवतार कथा मैं।
पद्मिन कृष्ण लिखा ग्रन्थ मैं ५
त्यहि बढ़ि कह महराज कीन मैं
ग्रन्थ सबन के यातें प्रवीन मैं॥

अस कहि सब सुनाय इमि भाषा
महाराज अब यह अभिलाषा है
आपुहु निज मुख सों कछु कहिये
व्याख्या सुनि जासों सुख लहिये
कह महराज बहुत नही अच्छा
सुनहु विप्र करि के चित स्वच्छा ७
अर्थ्य सत्ताइस नुरने कीना।
सुनि सो बुध भो आनद लीना।
अरु कह जो मम ढिग ग्रथ मुद्रा
होत निछावरि करतन क्षुद्रा ८

दोहा।

पणिडत जिव गारवन बहुरि गङ्गा धर मिश्र दोय
महाराज ढिग रहि पठो विद्या वर्णन सोय १

चौपाई

जिव गारवन त्रिपाठि गङ्गा धर।
प्रागस्त्री दोय अतीव बुद्धि वर।
ग्राम लसोढ़ा बौड़ी पासा।
बहिराय च प्रदेश मैं वासा २
वैयाकरण रूप हूउ पणिडत।

प्रथम पढ़े निज देशा अखण्डित
पुनि काशी नदिया प्रान्ती पुर।
पढ़े अनेक ग्रन्थ मुदित मुर ३
मीमांसा व्याकरण न्याय सब
पढ़ि पढ़ि गुरुन सों विद्या भये तब
कीन विचार मार्ग में दोई।
बीस बर्ष हम पढ़े न गोई ४
शास्त्रार्थहु जहँ तहँ बहु कीना
जिन्हों कीन बुधन पर बीना।
अरु है अवध सुदेश हमारा।
संस्कृत बोलि विपादि सोध्यारा ५
तब चलियें निज सदनहिं दोऊ
हमि कहि अवधहि आये सोऊ
महराज दर्शन करि जी के।
बैठि गये कछु कहा नु जी के ६
महाराज संस्कृत में पूछा।
कहु तुम सदन कहा नहिं कूछा
पुनि कह महाराज यह बानी।
बोलत कस न बुधाहु बड़ ज्ञानी ७

तब बोले दोऊ महराजा ।
तुम ईश्वर हौ सबगुण भ्राजा
तुम्हरे सम्मुख सत्य बखाना।
करन चही सो करत न आना ८
हृदी हमन की यह अभिलाषा
निजपरिछ सकहब निज भाषा
पूछ्यहु कृपाल प्रश्न जो आपू।
तासु एकपरसु निहिय कापू ९
शोचत सकल भाँति पर नाहीं।
मतिपहुँची तहँ लघुका काहीं॥
अबहम निज परिछताई आपहिं
काहु जनावैं मन मन जापहिं १०
अब लगि रहि परदेश स्वजननू।
वृथा गवाँये करत स्वमननू ॥
अस मन होत सरयु महँ डूबी।
अब घर जाय लहब का खूबी ११
कह महराज वुधन को ऐसा
कहन न चाहि कहत हौ जैसा
पुनि निज श्राद्ध अर्थ कहि दीना

ग्यहि सुनि श्यम भ्रमे परवीना १२
अरु कह जो विद्या तुम लीना।
पढ़्यहु नाहि नीज कैसव योगा
यक यक ग्रन्थ सवन कर हमसे
पढ़ि कै साफ़ करहु प्रभुढबसे १३
तो सब प्रास्त्र भरम मिटिजाई।
यह सुनि उन स्वइ कीन उपाई
जा सौ नाम सुयप्रा उन केरा।
पण्डिताई मैं भयहु घनेरा १४
वैल राज्य मैं ग्राम महेवा।
गङ्गाधर तहँ रह वुध देवा॥
जिवरावन स्वर्गी ह्वै गयऊ।
अवहि गङ्गाधर वुधमयऊ १५
पर महराज कृपा सौं दीऊ।
इमि वुध भये बोलु नहि कोऊ
वहुत दिननलगु वुधजिवरावन
लक्ष्मण पुरमहँ कियसुखलावन १६
वकसीटि पुरचन्द्र के पासा।
रहि किय वुधनसौ वाग विलासा

जीतीसभा अनेकन तेई ।
हारे कबहुँ न बड़ बुधसेई १७
मञ्जूषा महराज पढ़ाई ।।
अष्टादश सहस्र श्लोकाई ।
सो कण्ठाग्र सदा न्यहि रहई ।
नित्य पाठ ताकर कछु करई १८
बहु को कहै मरम हौं बारा ।
सब सन कहिउँ मैं बात उचारा ।
भाइउ मञ्जूषा मम ज्ञानी ।
देहु लगाय न आन पोसानी १९
अरु शरणागत भयहु पर मोरे
देहु सङ्ग न्यहि दयहु निहोरे
मञ्जूषा विछोह दुख मोहीं ।
जासो होय न विनवौं तोहीं २०
वैसे कीन चिन्ता पर सोई ।
धरि किय मरम न निकट नहिं गोई
गङ्गाधरहु अनेक सभा मैं ।
यश पायहु पण्डित नहिं यामैं २१

## दोहा

खराडन व्याख्येन्दिरा धर मोजमि भद्र फत्तूरि
भयहु निरुत्तर सो कहत सुनियो करि भ्रम दूरि १

## चौपाई

परिभाषेन्दु शेखरी टीका ।
व्याख्येन्दिरा धर सु अति ठीका
महाराज ने रची अनूपा ।
न्यहि लखि होत बहुत बुध चूपा २
ता पर भद्र जनक पुर वासी ।
नाम फत्तूरी बुद्धि प्रकाशी ।
खेया करण रूपकिय खण्डन
जान्यो अब न होय गो मण्डन ३
~~सकल सुयश सकल विधि होइहि~~
बुधजन कबहुं कतहुं नहिं गइहि
यह विचारि सो अवध पठावा ।
जस गुरु लोचन गोचर आवा ४
तैसहि वर्णाधार व्याख्याना ।
रचि विदेह पुर पठव महाना ॥
जामैं भद्र फत्तूरी डूबे ।। ॥

छत्वे होन गये भे दूबे ५
नहिं उतरा न आज लग सोई।
उत्तर देहिं कवन विधि ओई॥
अरु तारवराउत मैं महराजा।
प्रथम पद्य जोलिरव्यहु ससाजा६
तासु अर्त्थ यहहै सुनि लीजे।
सुनि निज मन गुनिजयजय कीजे
जो पर्व्वत उरवरैया पाही ७
मही पुरुष उरवरा वत आही
चिन्हे काहु कहनाजा चाही।
मतलब तासु कर यह आही
इहां प्रोष कृत भाग्यहु केरे।
खराउन माउन होत घनेरे ८
तौ कस्तूरि कृत खराउन करना
कौन कठिन काजवरवरना
भई कस्तूरि बात तिमि भाई।
तिमि मोहिं तहै कै कोठजाई ९
पर्व्वत पुत्र उरवारन हारै।
दिगजावै इमि बात उचारै॥

धरनी फूल उरवारहु आई ।
तनिक सहारहिमें नौ दुटाई १०
इमि भाषे ताकी अति भूला।
अरु मूरखता विदित अनुकूला
होत बहुत जनजगमें ऐसे ।
फिरि फतूरिकिमिलिखेनवैसे११

दोहा।

खण्डन श्री भागवत पर समाधान करिदीन।
सुखसरिन्नय अभिलाय सो सो अक्कलतप्रवीन१

चौपाई

विसु प्रकाश सिंह सुखसीके।
महाराजसब गुणागण भरिके
हृदश्री यूत मुद्रा प्रति वर्षू ।
देत महाराजहि युतहर्षू २
जिन गुरु गोरख क्षेत्र निवासी
विद्यारण्य नाम सन्यासी।
कह भूपति सों देवि भागवत।
अष्टादश पुराण महं भावत३
विसु भागवत तिनसे बाहिर।

वोपदेव कृत है यह जाहिर
व्यास रचित नहिं निस्सन्देहू।
सुनि कह नृप प्रमाण कस येहू॥
सुनि सन्यासी मति अनुसारा
स्वर्ग एक रच्यहु भूतिन्यारा।
देवी भागवत स्थिति नामू।
लिखि पढ़वा श्री काशीधामू॥
अरु निरइति नदिया प्रान्ती पुर
भेजा उहहुं भई करलिपि कुर
पण्डित मत अवलम्बि नकीनी
करलिपि सकल बुधन नहिं दीनी॥
तब भूपति कह प्रज्ञ शिरोमणि
श्री चि पाठि जब देखि देहि भणि
तब प्रमाण होवे त्यहि केरा।
यह बिचारि किय अवधहि फेरा॥
लै स्वर्ग भूपाल सिधावा।
श्री महराजहि बना बनावा।
निज मत पोथा दिखो महराजू
सम्मत देहिं प्रचारो आजू॥

देखत ही कह श्री महराजा ।
सुनहु न्रपति परिहरि सबलाजा
विष्णु भागवत वेद व्यासा ।
रचि कै कीनलोक पचकाण्डा ६
जो साक्षात कृष्ण अवतारा ।
कीन ग्रन्थ यह सहित विचारा
अष्टादश पुराण मैं याकी ।
निश्चय गणना बुधगण ताकी १०
श्रुत तव गुरु जो नौ श्री व्यास ।
तुम सुनि कै कीन्हो यह काण्ड
इहि अपराध कौनहि थाही ।
हमतव वदन लखन नहिं चाही ११
अरु अधर्म मनहू नहिं सम्मति
देत चही मुनि लेहु महीपति ।
खण्डन करि चाही कछु काजा
करन सत्य कहते हम राजा १२
नाही समय तासु किय खण्डन
पुनि कोइ पूछै न करि त्यहि अण्डन
नीचे लिखत जाम त्यहि केरो ।

लषहिं सुजन निज मन कौ हेरो १३

अनुष्टुप्छन्दः

श्रीमद्भागवत द्रोह दम्भ मूधर भेदक। ।।
दम्भोलि कहिये नाम पाखंडि मन छेदक १४

दोहा

राजा सन्यासी गृहाश्रमी कौन अस आय।
जो वह खण्डन देखि कै हर्षित हो न बनाय १५

चौपाई

त्यहि खण्डन मैं यक पद केरो
है यह अर्थ सुनो हिय हेरो ।।
बोप देव जो ग्रन्थ बनाये ।
तिन की गणना लिखी सुहाये १६
तामैं लिखा कि ग्रन्थ तीनि मैं।
रच्यो भागवत पर प्रवीन मैं ।।
परम हंस प्रिय यक अरु दूजा।
हरि लीला अस नाम सु पूजा १७
तिस र भागवत मुक्ता फल अस।
नाम कह्यो नहि भन्यो आन बस
यदि यह श्रीभागवत हु नास् ।

शरीरकछु भाष्यहमेरी ।
याहीविधि श्रीमद्भागवत् ।
व्यासरचित्तहै चुपरु अबत्२८
जोयह सबसे अधिकविलक्षणा
ताकरकारणासुनहिंविचक्षणा
रचतरचतइतिहास पुराना
श्रुतिनिर्म्मलव्युत्पत्तिबखाना२९
मरमप्रेमसों सब के पीछे ।
रच्योग्रन्थ यहमतिकल्पीछे
यासों सबसे अधिकविलसतरां
अरुउत्तमयहगुनहिंविचक्षणा३०

दोहा

यहिविधिरामाधीनसिंह श्रीमहराजसमीप
भूलेनिजपाण्डित्यको कहतसोसुनु कुलदीप१

चौपाई

राजराजदपूनिसिंह केरे ।
जोसबभांतिप्रतापबडेरे ॥
रामाधीनसिंह सुतजेठे ।
पण्डितराजजगतिकेहेठे २

जो पिव भक्त अनन्यप्रसिद्धा
लै दण्ड वीणा सचिव युववृद्धा
श्री महराज दर्शन के हेतू ।
आये सो करि बैठि सुचेतू ३
कुशल प्रश्न पूछा महराजू ।
तब नृपसुत बोल्यहु करिसाजू
महाराज जो गीता माहीं ।
सर्व्व धर्म्म तजि भजन कहाहीं ४
तवसम्मुख ताके गुण अर्थ्यू
कहब न रुकब कहत नहिं व्यर्थ्यू
अरु ताही पर आपहु केरी ।
होउ पराजय तनिक न देरी ५
यह अविचारसहित सुनि बानी
महाराज बहु हँसे बखानी ।
जासों पुत्र भाव महराजू ।
रामाधीन आदि महँ साजू ६ ।
रामाधीनसिंह सुनि लेऊ ।
भारत में यह लिखवा अहेऊ
की सब से जीतन की इच्छा ।

रावन चही शास्त्र यह शिक्षा ७
परधन लोहारन की काङ्क्षा ।
सदा वही नहिं जय की वाञ्छा
यासों जो तुम्हरे कर पाही ।
होय पराजय मारि भलाही ८
आन काङ्क के हाथ दवावहु ।
होय पराजय क्षिति महँ सबहू
जासों हम मैं पिता तुम्हारे ।
भाय भाव राखत थे प्यारे ९
अरु हम तुम मैं पुत्र भाव नित
रावत शोच नहीं हमरे चित ।
परतजि अर्थ निनानव एकू ।
शुद्ध अर्थ कहु मम हिगनेकू १०
यह कहि यह शालोक गुरु भाखा
जासु अर्थ है यह अति चाखा ।
रावण अरु दुर्योधन दोई ।
मानी प्रथम भये नहिं कोई ११
तीजे रामाधीन न शङ्का ।
होन हार चौथो नहिं वङ्का ।

बड़े सोच की है यह बाता ।
कहत लोग जो जिन्हैं सुहाता १२
यह सुनि गर्व माधीन नरेसू ।
अति लज्जित मे विनय करेसू
क्षमा कराय सकल अपराधू
गे निज भवन रहित सब वाधू १३

दोहा

सखा भाव रघुनाथ मे उत्तम है सब भाँति ।
सखी भाव सौं सो कहत सुनहु सकल बुध पाँति १

चौपाई

चित्रकूट महँ एक महाना ।
सीभिक्षु का चार्य्य परधाना ।
परम हंस निवसत थे नीके ।
सखी भाव रघुपति मैठीके २
योषित आपहि रामहिं स्वामी
समुझि करत पूजा अनुगामी
अरु जो अवध माहि के केती
मन्दिर सुभग बनी सुनि रेती ३
कनक भवन अरु अन्यहि कैहैं लोग

जो नहिं मम मनिबे योग्
तहँ श्री वासुदेव शुभ नामा।
परमहंसहैं सबगुण धामा ४
उन्हैं रामजी मैं सुख दीनी।
सखा भाव रह वेद प्रकाशी।
एकसमय श्री चित्रकूट के।
परमहंस वरक्षिति निखूट के ५
निज भावना पत्र मैं लेखी।
आवध परमहंसदिग पेखी।
तापर परमहंसदुन लीखा।
निज भावनाजो भलिविधिपरीखा ६
चित्रकूट के परम हंस सब।
इन भावना कीन खण्डनसब।
श्री महराज निकट सो गेरी।
निर्णय होन हेतुचित्तहेरी ७
दोनो खण्डन लखिमहराज।
नव खण्डन एकरच्योसुसाज।
सख्यसरोज भास्कर नाम।
चारिसहस सु श्लोकसुसाम ८

निर्णय कीन्ह सकल विधि तास्
भक्ति विवेक कर जहँ वास् ।
जिमि ता में वर्णनि तिमि नाहीं
कोउ आचार्य्य कीन्ह महि माहीं ।
यह सिद्धान्त ग्रन्थ कर आई।
सखा भाव उत्तम श्रुति गाई ।
जासो आठ पहर सुख पाई।।
सखी भाव यक क्षण सुख दाई।०

दोहा।

कृस्न प्रागस्ति श्री राम मैं कृस्न चन्द्र सम्बन्ध ।
कछु कहि उत्तर राहुल भे सुनियो सोउ प्रबन्ध १
रामनगर के राज्य मैं यक गणेशपुर ग्राम ।
वाघरगराडकि। सन्निधि वसत बहुत अभिराम २

चौपाई

महँ सरयू प्रसाद निरवेदी ।
राम भक्त वसैं सब अघ भेदी।
जिनकह भक्ति भाव के कारण।
मिली महन्त परवि भयदारण ३
वेहैं श्री रघुनाथ उपासक ।

गरवन ध्यान केरि नहिं आवा क।
अरु हारका प्रसाद अवस्ती।
कृष्णोपास्य यसैं त्यहि बस्ती ४
अन्यउपासक देखि करारी।
करत दूसरो छेड़ा छारी ॥
यद्यपि यह सब भांति भदेस्।
परन करत कछु करत अँदेस् ५
एकदिन श्री हारका प्रसाद्।
कह महन्त सनसहित विवाद्।
भगनीत कोपाल्लपति गेहा।
व्याहे रामचन्द्र न संदेहा ६
यासों श्रीरघुनाथ तुम्हारे।
रामचन्द्र के लागत सारे॥
यह सुनि कै महन्त लिखिचीठी
महाराजउत्तर लिखि दीना।
भगनीतनृपअवध पतीना॥
सूर्य्य वंश महँ रामु नजनन्।
देखहिं बुधगणकरिकैमनन् ८

जो कोपाला विन्ध्य गिरिदक्षिणा
भूषनहीं करकहन्य रक्षिणा।
श्री द्वारका प्रसाद कहानी।
यामों रथा सकलजगजानी ८
हौं श्री कृष्ण राम जी केरे ।
अलबति पूर्व पुर लगनवुधहेरे
जासो सत्य भामा वसुधा पूजा।
अरु सीता महि सुता खुलासा १०
कृष्णबधूटी है सत्य भामा ।
सीता राम चन्द्र की बामा ॥
यह सरयू प्रसाद लै चीठी ।
किय द्वारका प्रसाद किदीठी ११
करि द्वारका प्रसाद एक प्रति
भेज्यहु कृष्णशास्त्रि यह युत यति
धीर समीर घाट वृन्दावन ।
बसतसो शास्त्री जानहु सबजन १२
उत्तर शास्त्री जी जो दीना ।
नीचे लिखत सोलवहि प्रवीना
जोजो दीन उत्तर शास्त्री तिन

सोसो प्रश्न रहे दल काहिन१३
जोजिपाहिजू ने लिखि दीना ।
नहिं संशय कछु सुनहु प्रवीना।
प्रणावों कृष्णचन्द्र गोपाला ।
जिन गोपी दधि सों तनु पाला१४
गिरु हरसों उतारि सोरवरिपर ।
बैठि भलीविधि रायहाथधर।
लखि यदुमनि भयभुतहै भागे।
हरहिं कृष्णसो मम भयआगे१५

दोहा

द्विजसरपणसाह अरु द्विज हारका प्रसाद।
इनमिलिकेजो कीनहै उत्तम वाद विवाद १६

चौपाई

तामैं बुधवर श्री मदुमापनि ।
रामचन्द्र वर मित्र महा मनि॥
धीपू सभापति परम सनेही।
पत्र लिखन्यो विचारि कहेही १७
यासों कृष्ण प्राख्यमैं नीके ।
उत्तर मासु लिखनविधि ठीके

लिखा पत्र मैं जो चित्त्वारी
कोटिन पुरुष भये परभारी १८
रामचन्द्र पीछे सुनगन जिन।
भयउ सो नहि यहबात अहैमिन
तासों रामचन्द्र सुत कुशाहू।
कुशके अतिथि अतिथि निषधहू १९
निषधके नभ नभके पुंडरीका।
पुंडरीक सुत सबविधि ठीका॥।
क्षेमधन्वा तिनके देवानिक।
पिता अक्षीनभु के त्यहि जानिक २०
पारजात तिनके तिन केवल
बलके स्थल तिनवज्रनाभभल
तिनके स्वगणावि धृतितिनकेरे
तासु हिरण्यनाभ मानेउँरे २१
तासु पुष्य तिनके ध्रुवसन्धी।
तासु सुदर्शनि सुत सम्बन्धी।
तिनके अग्नि वर्ण तिनकेरे।
शीघ्रशीघ्र के मरु मरु केरे २२
पुत्र प्रसु सुत सन्धि ताहिके।

तिन के अघमर्षण निवाहि के
महस्वान तासुत तिन पूता ।
विप्रवसाहु असनाम पुनीता २३
तिनके सुत प्रसेन जित नामा।
सकल भाँति सों पूरण कामा
राम छबीसी पुस्ति भयोयह
नाम नग्न जित यहि दूसर कह २४

दोहा

उग्रसेन कर नाम निनि पुर सेन है दूज ।
तिमि प्रसेन जित नग्नजित दोऊ नाम सुपूज २५

चौपाई

अरु नोलिरसा नग्नजित भूपा।
अवधपुरी कर नहिं अनुरूपा।
सोवह अवधहि कर भुआला।
श्रीधर स्वामि लिख्यो यहि हाला २६
कोयह भूप अयोध्यहि केरो ।
जिन निज सुता कृष्ण वर हेरो ।
कहा कृष्ण सों मैं निज तनया।
पति तुमहीं को मानत सदया २७

यहि लेखन सों मत लब येहू।
है कि मदीय वंपुय नहिं केहू।।
तक्षक वृहद्बलादिक मानत।
जो दुर्य्योधन सङ्गी भानत २८
याही सों अर्जुन रणा माहीं।
मारा वृहद्बलहि पुरा नाहीं।।
नग्नजीत पोता यह आई।।
जासु वृहद्बल नाम बताई २९
अरु जो लिखा कि दिनकर वंशी
कन्या देत न कबहुं प्रशंसी।
सोम वंशि भूपन को सोऊ।
ठीक नहीं हम सों सुनि जोऊ ३०
सूर्य्य वंशि सुद्युम्न नरेशू।
तबे योषित ह्वै गयऊ भदेसू।।
तब त्यहि सोम पुत्र बुध साथा।
भयऊ विवाह प्रकट यह गाथा ३१
अरु दिनकर वंशी पुरुषानी।
ताकर रेवत भूप बखानी ॥॥
ताकी सुता रेवती जोई।

श्रीबलदेवहि ब्याही सोई ३२
अरु कालिन्दी सूर्य्य कुमारी
ब्याही कृष्णहिं बात करारी
अरु सब सखा परस्पर भ्राता
होत सकल जानत यह नाता ३३
सत्रजित अरु दिनकर केरी ।
विदित मित्रता हती घनेरी ।
सत्य भामा सत्रजित कन्या ।
सो भई सूर्य्य सुता गुणमन्या ३४
अरु जो लिखा कि दिनकर वंशी
गोपा चरणान करत प्रशंसी ।
यहौ बात नहिं ठीक बखानी
रूपदलीप की सुनहु कहानी ३५
गोपाल कना करि रहु नामा ।
पायहु पुत्र सकल गुण धामा ।
अरु जो लिखा कि अतिबल भुआला
गज तुरङ्ग दिन्नत सब काला ३६
कबहुँ न वृषभ प्रतिज्ञा करहीं ।
जिमि कियनग्नजीत नृपबरहीं

दीन सो नगनजीत दायक्त हूं ।
कुमहिं नव सहस्र वराजहू ३७
अरु नव लक्ष दीन रथनी के ।
तुरग दीन नव कोटि मुठी के ॥
अरु नव अर्व्व मनुज सो दीना
जानत हैं बुध लोग प्रवीना ३८
अरु पिछले वंध्यु न की कन्या
अगिले बालन हूं की मन्या ॥
जैसे पौत्र सुता बाबहु की ।
लड़की मानीजात अबहुं की ३९
यासों नगनजीत की कन्या ।
मन्या रामहु कन्या मन्या ॥
अवध नरेश सुता बहुतेरी ।
सो भरि माथुर व्याही चेरी ४०
वृन्दावन सो जब यह खण्डन ।
औ हारक विप्र मन मण्डन ॥
आयहु तिन दिखवण्यहु नीके ।
रामचरण बुधकहं करि ठीके ४१
अरु सरयू प्रसाद द्विज हू को ।

दीनलगाय ननिक नहिं चूको।
गणिडतजी अवधहिसोचिहो।
महाराज ढिगपठयहु ढिढी ४२
महाराज देखतन्यहि खराडा।
पुनिन आजुलगुनिनत्यहिमराडा
खराडनमैं मङ्गल्या चरण कर।
है यह अर्थ सुनहिं मतिवर नर४३
सबसुख अरु मङ्गल के दाता।
महानन्द राणिप्रदभय त्राता॥
सबसज्जन समाज सुखदाई।
पुण्यचित्त दानीप्रा कहाई ४४
मधुरमनोहर मूर्त्ति हमारे।
तनधनमन श्रीराम पियारे॥
चक्रवर्त्ति सुत दिन अरु राती।
विप्रज्ञान फारैं सबभाँती ४५
अविचारी हारका प्रसाद्।
किय श्रुति व्यथा कथा करिवाद्
वेदवेद्य ममहृदय निवासी॥
रामभद्र महँ स्वसुखा प्रकाशी ४६

तापर कृष्णप्रास्त्रि निज नाम् ।
एक हयो गुण कारि वृष्णकला नू
काले नाग काक कलियुग को
कृष्ण कहत कविजन सब जग को ४०
लिख्यो अलेख लेख सब जा सो
अर्थ घटित भये सब तासों ॥
जिमि माता पितु सुतहि प्यलावत
अनुचित उचित कहन जो भावत ४८
तिमि मदुक्ति खण्डन किय मोरु ।
ह्यो न शोच तनिक उर कोरु ।
परमन्दर परिमाणु न्याया ।
प्रकट कीन हनुमान मिगया ४९
न्यहि समुद्र महँ बूझहु मन्दर ।
कहु परिमाणु काह न्यहि अन्दर
रामचन्द्र अवतार अनन्तर ।
कोटिन पुरुष भये परन्तपवर ५०
भयहु नग्न जिन यह खण्डन हित
लिखी भागवत कथा मुदित चित
कीछ्वि पुरुषन के सीछे ।

भये नगन जिन अन्त गति सुतीछे ५१
यह इन लेखन बिना विचारू ।
व्योम पुष्प समहै निरधारू ॥
जासों श्री हरिवंश पुराना ।
लिखत साफ देखहु धरि ध्याना ५२
चौबिसवें त्रेता महँ रामा ।
अवध अन्त गति दशरथ के धामा
चारि मूर्ति करि प्रकट्यो कुल नीके ।
पाल्यो धर्म्म सकल विधि ठीके ५३
अरु मार्कण्ड्य पुराण बखानत
जाहि सकल बुध सब विधि जानत
अट्ठाइसवें द्वापर माहीं ।
कृष्ण चन्द्र जनि कछु शक नाहीं ५४
यहि हिसाब सों एक करोरी ।
लख एकादश अरु सहस बहोरी
वर्ष राम अरु कृष्ण जनन में
अन्तर है कछु कहत न बनमें ५५
चौबिसवें त्रेता की साँझा
एक लख आठ सहस ज्यों माँझा

भयहर राम अवतार कारी ।
खल बलदलन साधु हितकारी

दोहा

आठ लाख चौंसठि सहस पुनि द्वापर के वर्ष ।
बारि लाख बत्तिस सहस कलियुग वर्ष सहर्ष ५७
पचिस लाख बिंशति सहस चतुर्युगी वर्ष कर योग
एक कोटि उन्तीस लख साठि सहस सब भोग ५८
अट्ठाइस वीं चतुर्युगी द्वापर सन्ध्या हीन ।
अठिस लाख सोरह सहस भारत वर्ष प्रवीन ५९
द्वापर ही के सँझ में कृष्ण चन्द्र अवतार
भयो वर्ष सब जोरिये उनतेहैं सविचार ६०

चौपाई

अरु इकले द्वापर युग माहीं
मनुज आयु युग वर्ष जो आहीं
तिन कर किये हिसाब छबीसा
पूरति नहीं कौन करु कीसा ६१
नासों आठ लाख अरु चौ सठि ।
सहस वर्ष द्वापर युग में हठि ॥
अरु यक सहस वर्ष की तामें

नर आयुष प्रङ्का नहिं यामैं ६२
जो सब पूरी आयुष पावै ।
अठसै चौसठ पुस्ति बितावैं।
केवल द्वापर ही मैं जानूं ।
और युगन की किमि गति मानूं ६३
छ्वि पुनि पुस्ति हिसाब न केहू ।
भाँति होत सम भेंसब येहू ।।
जेता आयुष हू जब लीजै ।
तब इन छ्वि पुनि पुस्ति कहीजे ६४
कोटि पुरुष अन्तर सो नीके।
समुझि परत सब विधि सौं ठीके
अरु आयुष की ओर विचारो।
तो भारत को लेख निहारो ६५
जहँ द्रोणाचार्य्य हि की आयुष
वर्ष पचासी ही न तहँ सुख।।
इमि भीषहु की आयुष जानौ
इनसे न्यून युधिष्ठिर मानौ ६६
उनसे कम श्री कृष्ण केरी ।
भई सहस की काहु न हेरी ।।

यह हिसाब सौं कोटिन पुरुष
भये होहिँगे छविप्रा मरुधई०
एक करोरि यकाणी लाखा ।
अणी सहस्र वर्ष मैं भाखा ।।
छविप्रा पुस्तिन कौनिउ भाँती
होत करोरिन की यह पाँती ई०
यासौं छविप्रा पुस्ति कहानी ।
मृषा मृषा सुनि होत गलानी ।
अरु भागवत केर यह आपाय ।
गनत प्रधान पुरुष असमाखई०
यह नहिँ है कि कहि सो गने ।
भये पुरुष वसाउन जेते ।।
यासौं लिख हरिवंप पुराना
कीनजो हम यह वंप बखाना ००
सोइ इक्ष्वाकु वंप मैं जेते ।।
भये प्रसिद्ध कहा हम तेते ।।
यह नहिं है कि भये इतनोई
जिन जिय तक्षि बढ़ावै कोई०१
त्रेता अन्त राम अवतारा ।

द्वापरान्त श्री कृष्ण विचारा ।।
यह सर्व्व लिखा नसँदेहू ।।
देखैं सुनैं सकल बुध येहू ७२
जासों जनहि होत अवतारा ।
युग सन्ध्यांशहि माहिं प्रचारा ।
यासों राम कृष्ण की मूरति ।
युग सन्धहिमैं भये सुमूरति ७३
अरु जो कृष्ण पुरानिलिखि दीना
सूरसेन सम नाम प्रवीना ।।
है दूनो उग्रसेनजित नामू ।।
नगजीत यह वृथा कलामू ७४
जासों मूलरु टीका माहीं ।।
कतहुँ प्रमाणलिखा यहनाहीं ।
अरु टीका मूलहुमहँ नामा ।
उग्रसेन के लिखे सुनामा ७५
अरु श्री मद्भागवत पुराना ।।
सूर्य्य वंश के भूप बखाना ।।
परन नगजीत की कछु चर्चा
कीन खोज देखा करि फर्चा ७६

यासों नग्नजीत नृप काहू ।
अवध महीपन काहु बताऊ ॥
अरु जो श्रीधर टीका माहीं ।
लिखा नग्नजित अवध पति आहीं ७७
सो तब आँसि भयो भ्रम नाहू ।
बत बढ़ाव सों नहिं कछु लाहू ।
अरु सुधुम्न कथा जो लखी
वृथा एक नहिं तनक विपोषी ७८
जासों शापा क्रान्त महीपति
रही ठीक नहिं कछु ताकी गति
अरु बुध सङ्ग न भयहु विवाहू ।
ताके पिता दीन नहिं काहू ७९
कन्या रूप न जन्म्यो भूपा ॥
कृत्रिम की कावात निरूपा ॥
अरु कालिन्दी कथा वृथा हू ।
पिता दीन नहिं भयहु रुखा हू ८०
अपने आप हस्म कर पानी ।
कालिन्दी परकाश सब जानी ॥
अरु सवाजित हू की गाथा

यथा सूर्य्य है जग के नाथा ८१
वैकाहू विधि सत्राजित के ।
है न शाकत भाता गुण चित्त के
अरु जो कहहु भागवत माहीं
लिखा सखा कहिंतिन कहे आही ८२
सो यह लिखा सखा पद जोई ।
सो विप्रवस पाच हित होई ॥
जिमि वाल्मीक जी वलिषिकीनी
वालकाण्डमैं वहुत प्रवीनी ८३
कीदशरथ नृप कहावतानी
कौशल्या सौं निज हित जानी ।
तुम ममभाय वहिन सखि नाई
अहहु विचारि लेहु न भुठाई ८४
सो यह काम काम की ताई ॥
है विचार कछु नाहिं सदाई ॥
भोजन समय मातु सम वामा
दया समय भगिनी समसामा ८५
सखी समान सदा उपकारे ।
जानहु यह विधि सकल विचारे ।

ऐसे कथन माहि सो भानू ।
सत्राजित कै भायन जानू ८६
अरु श्री गरुड़ रामजी केरे ।
दासरु वाहन है श्रुति टेरे ।।
पर श्री राम कहा तिन काही ।
सरवा कारा उलटू हि मेलिखाही ८७
अरु महराज दिलीप कथा हू ।
वृथा लिखी जो ग्रन्थि बनाहू ।।
जासों श्री दिलीप महराजू ।
सन्तति मिलन हेत सो काजू ८८
अरु गुरु प्रसन्नता के हेतू ।
पुनि गुरु आज्ञा पालि सचेतू
गोपालन तिन कीन न बेषू ।
गोपन केर कीन यह लेखू ८९
अरु जो लिखा तिमिंगिलन केरी
कन्या ग्रसिलेहु नकि कहेरी ।
यहौ कथा तब वृथा मही सुर ।
धर्म ग्रन्थ नहि गुन्थहु मानि पुर ९०
एक विप्र पुरुषन के पीछे ।

सोयिएउना मिटत लिख तीछे।
कुल मर्य्याद नियम यहसबहूँ
भाषत धर्म्मणास्त्र लघु अबहूँ ६१
यासों कन्या पिछि लन केरी।
अगिले वपुयन कीन हिं हेरी।
अरु रेवती कथा पितृथाहीं।
लिखी पुरास्त्र कीलीन नथाहीं ६२
रेवत ब्रह्म लोक जब गयऊ।
जब लगु वह सोठहरत भयऊ
तब लगु युग अनेक गे बीती।
सब माहि मांहिष मो युगरीती ६३
अरु त्यहि समय रहे जो पूरुष।
सब छोटे तन के सुनु मूरुष।।
तासु विवाह निन्हन के सङ्गा
अति अयोग्य समुझ्यदु मनिरङ्गा ६४
अरु बलदेव जीव जाही सों।
हते विष्णु अवतार त्यही सों।
अरु ता के सम देह भये ते।
पुनि विधि अजा शीस धरेते ६५

अरु त्यहि समय न भय रहे ने।
भो विवाह वहँ मे सुबहे ने॥
अरु जो सौभरि की कहानी
लिखी दृथा मुनु कहत बखानी ९६
जासों सौभरि गुरा के खानी।
दानयाच विप्रोत्तम जानी॥
अरु मथुरा शत्रुघ्न बसाई।
तहँ के वासी सौभरि गाई ९७
यासो निज नगरहि के नेऊ॥
आनन हने क तहँ के केऊ।
अरु नृप मानधाता तिन केरे।
जानत गुरा सब भाँति बडेरे ९८
अरु त्यहि समय न मथुरा माही
रहे सोम वंशी नृप आहीं॥
यासो सौभरि केर विवाहू॥
भयहु अवध पति गेह उछाहू ९९
सत्या राम भामिनि यह बानी।
वेदहु लोकहु वाद्य बखानी॥
राम चन्द्र मैं पुरा लारोपन॥

मुख मस्तीति न्याय कछुकोपन१००
जिमि कोउ पूँछै बोलत जोई।
ताके मुखहै कीन नहिं होई ॥
जिमि इमि प्रश्न सुधा निमिसोई
पूर्वालाप काम महँ होई १०१
अरुजासौं धरणी अवतारा।
सत्यभामा यह पुराण प्रचारा॥
तासौं भूमि सुता की माता।
अरु रघुनाथ सासु सुनु भ्राता१०२
सासु केरपनि पूर्वपुर करारी।
होत लेहु यह बात विचारी॥
यासौं कृष्ण राम जी केरे ॥
लागत पूर्वपुर बात इमिहेरे१०३

## दोहा

जबयह दल वृन्दा बनाहै कृष्ण पुराणिके पास
पहुँच्यो तबि चुपहै रह्यो पुनि नवाद की आश१०४

## चौपाई

यद्यपि राम कृष्ण नहिं दूजे ॥
एकै सबविधि सबविधि पूजे ॥

उनमें पृथ्वी श्व सुर व्यवहारा
कौनिउ भाँतिन कियो विचारा १-५
परपरिहास भक्ति अनुसारा।
उभय बुधन यह नाम सुचारा
कौनिउ भाँति जीभसो भाई।
राम कृष्ण गुण कहे भलाई १-६
यासों मैं भाषान्तर कीना ।
होतिन के सब विधि आधीना।
समव सुजन जन मोरि ढिठाई।
मानि अनुरूप उभय यश गाई १-७

दोहा

एक समय काणी नृपति महाराज के पास।
लिखि पत्री पूछा कछू वर्णन महिन इलास १

चौपाई

श्री काणी पृथ एक दिन चीठी
महाराज ढिग भेजी मीठी।
नाम लिखे। कि खबर केरे।
नाम धाम रूप लीला चेरे २
कहाँ कहाँ यहि समय विराजत

लिखिबये उत्तरमनहिं मन गाजत
यह लखियउत्तर लिख्यो महराज
नीचे लिखनमहित सबसाज ३

श्री १०८ मन्त्रि पारी जी की दोहा

कोविद केवल धाम लहि तीनि लहो कापीप्रा
नामरूप देउ ईप्रा लहि लीला लहो महीप्रा १

चौपाई

अब मैं लिखत अर्थ यहि केरो
सुनहु सुजन पुनि निज मनहेरो।
कोविद श्रीयुत अवध निवासी
रघुवरधाम अवध लहि खासी ४
नामरूप लीला रहि वाकी ॥
तीनिउँ लहि कापीप्रा मु आँकी
पर कापीप्रा दीय सब काहीं।
विदित एक शिवयक कृपलाहीं ५
नामरूप दुइ लहो उमेप्रा ।
लीला लहो भूप शुचि देप्रा ॥
होत राम लीला इस मासा ॥
नहँ यासों यह अर्थ खुलासा ६

## दोहा

महाराज कर दास यक दौलत नाम प्रवीन
नाहि काहु अपराध सौं त्याग्यहु सेलिसि दीन १
दोहा जोनो चेलिसवत वाचहु लोग स्थान
यह लिन भेजी डाक मैं पुनि कै कार्य्य प्रधान २

## दौलति की दोहा

धाय धाय सब जग गत मैं दौलति राखन पास
सोकै मे बिलगाइये चरण सरोरुह दास १
यह लखि श्री महराज जो उत्तर लिख्यो विचित्र
सो अब मैं नीचे लिखत लखि जन होहु सुचित्र २

## श्री १-८ महाराज की दोहा

दौलत मैं दौलत बुरे मद अरु कोह अपोस।
धीरजी राखन नहीं यातें जानु विपोस १

## हरिगीतिका

जय भद्र कान्ति प्रताप मुन्मुनी सुभग लेखक जो सही
लिन लह्यो नहिं कहु गेज व्यय तब श्री सेहालिसि कही
सो लिखत हैं महराज हू मिमि उत्तर लिख्यउ विवेक ही।
लखि लेहु मज्जन सकल देचित करत क्लन पति ही १

नयभद्रकान्ती प्रताप की आधीदोहा
सम्वत्विन गुरुदेवजू व्याकुल भयो शरीर
इस का उत्तरार्धी १८ महाराजजीकी आधीदो
एकाणीकाणी सुमि मनमें धरिये धीर १

चौपाई

अर्थ आधि दोहा कर येहू ।
कहत सुनहु सज्जन चितदेहू ।
एकाणी मन काणी समाना ।
भाषा श्री महराज महाना २
काणी में चरणा मोचन कुण्डा
करत स्नान होत चरणा खण्डा
तासम वर्ष यकाणी केरो ।
चरणा खण्डि हिंदे द्रव्य घनेरो ३
धरहु धीर मन में न संदेहू ॥
चरणी भय कुंडमें नवै कहेहू ॥
यह उत्तरार्ध हर्षित मुनीशी ।
भये गई तिनकी सब रुसी ४

चौपाई

एक दिन एक विप्र नहँ आये ।

महाराज कहँ वचन सुनाये ।
महाराज हम सब सुख पाये ।
घूमि घूमि देखा करि चेतू १
पर फकीर काहूहि नहि देखा
सकल समहरि हैं तृण पेखा
करत राज्य सुख सब निज गेहा
पीन नवीन प्रवीन सुदेहा २
यह सुनि महाराज मोहि पूँछा ।
तुम कछु पढ़े अहो की छूछा ।
तब हिनु कहा कि तुलसि कृत नीके
पढ़े अहैं हम सब विधि ठीके ३
कह महराज पढ़हु तौ नीके ।
जामें सुर दुर्लभ पद ठीके ।
उत्तर काण्ड की है चौपाई ।
कहत पढ़े पर दिह्यो भुलाई ४
तब आधी चौपाई यह है
सुर दुर्लभ सुख करि जग माहीं
अन्त काल रघुपति पुर जाहीं ।
यह सुनि विप्र चरण लपटाई ।

कहु महराजहि माथ नवाई
मैं यह प्रश्न अयोध्या माहीं।
गुरु सनत्य प्रागण मुख पाहीं॥
पूछ्यो पर नउतर दिय काहू।
आजलह्यो सब विधि मैं लाहू।
करि प्रणाम हिज गयउ स्वधामा
सुमिरत महाराज गुण ग्रामा ६

दोहा

जिमि किय ग्रन्थ समाप्त निज रामचरण बुध केरि
सम्मति लै श्री लालजी सुनहु कहत सो टेरि १

चौपाई

श्री परिडत महराज महाना।
रामचरण बुधराज बखाना॥
चाघरनट गणेशपुर वासी।
बाहबङ्गी ज़िला विलासी २
तासम सुकवि न दूसर कोई।
राम भक्ति पुनि तासम सोई॥
अरु तासम उदार नहिं आना।
परिडत लखा नमृषा बखाना ३

मीमांसा व्याकरण न्याय सब।
काव्य कोष अरु अलङ्कार अब
धर्म शास्त्र सब जानन हारे।
महा सुशील गभीर सुधारे ४
जिन के अद्भुत धर्म्म रु कर्म्मा।
सकल बुधन सौं अधिक अधर्म्मा
परम दया करि उन मुन्शी पर।
महाराज दिग्विजय चरित्र वर ५
ताके ज्ञान योग्य भाषान्तर।
करि लिखाय दीन्हो सब बुध वर
लाल जीवड़मिश्र चाहत रह्यऊ।
कथा शास्त्र सों जो मिलिपि भयऊ ६
अरु वराङ्गना राङ्गना महगाजू।
त्यहि विधि कीन सकल कर्म्मा साजू
ऐसे यहि पद पदार्थ जिमि जिमि कहि
धर्म्म निरूपण कीन शास्त्र गहि ७
सब कारने सारांश लिखाइय।
यह मुनि एम चरण बुध गाइय।
की यह ग्रन्थ माहिं सङ्क्षेपा।

महाराज की कथा निरूपण ८
जन्म पठन पाठन दिग्विजय ।
सब विस्तार सहित नहि भन्यय ।
अरु जो एक जगह यक दिनकी
वार्त्ता लिखवन चहहु गोतिनकी ।
तौ न समाप्ति ग्रन्थ की कबहूं ।
कोनिठु भांति होइहै सबहूं ।।
जासों श्री महराज महाना ।।
रचो ग्रन्थ अनेकन भाना १०
धर्म्म कर्म निर्णय नानाविधि
वेद शास्त्र मत लैलैकियु सिधि
अरु दिनदिन नव करतहैं जाहीं
तिन भाषान्तर कैसलिखवाहीं ११
जोजो भाव दयानिधि भाखे ।
भाषान्तरहि न आवन राखे ।।
अरु लिखवन वन सो सब माफ़
जो निज मुख महराज बताफ़ १२
यासों अवशेषि ग्रन्थ समापो ।
सकल लिखवन की वातन जापो

हाँ मीमांसा न्याय व्याकरण
इनआदिक केरचे ग्रन्थ गणा१३
जो जो श्री महराज अनूपा ।।।
तिनके नाम लेहु लिखि चूपा।।
श्री महराज कृत्य अवलोकन
अरु तिनरचितशास्त्रविलोकन१४।
अरु तिनभणितग्रन्थके नामा
देखि लेव सब सुखकी सामा ।
अरु जो षंडित सुकृति विचारी
तिनसब कहँ सुख देय करारी१५
यह सुनि लालजीव रहि गयऊ
नानासत्य कहत बुधहयऊ ।।
सब ग्रन्थन के नाम करारी ।
लिखनलयहु बुधहोहु सुखारी१६

दोहा

इतो शास्त्रविद्यामकल्सब महँ श्री महराज
शाधन बाधन कौनसा वरणत कारतहु साज १

चौपाई

हैं यह शास्त्रविदित संसारा ।

उनके आचार्य्यनमति चारा
जोजो आगम लिखे करारी।
जिनपर श्री महाराजन्य वारी २
जोजो ग्रन्थ रचे सर्वलिखकूँ।
लखहू सुजन तुमकहूँ कापिषकूँ
न्याय ग्रन्थ के कारण अचारज
नव पदार्थ वर्णनिहैं आरज ३
यामैं न्याय नरङ्गिणी नामू।
ऐसो ग्रन्थ महागन लल्लामू ।
जामैं नरह मैं अगलोका।
लखनहोंहिं वुध सकलविशोका ४
दूसर वैशेषिक वड़ ग्रन्थू ।
नामु गौतमाचार्य्य सुपन्थू ॥
वर्णनि छदशो पदार्थन केरो
वर्णनि हेतु सुजन मन हेरो ५
न्याय वैशेषिक ग्रन्थ रोजोमाहीं
नव सात्म पदार्थ भाषाहीं।
यह को महाराज दुतहुन को।
अरु मतान्तर भेदवहुन के६

किय चौमुख परमार्थ व्याख्याना
गुप्त नहीं सब प्रकट बखाना ।
तीस२ साहस्र ग्रन्थ प्रति आखर
कपिल देव आचार्य मुनागर ७
यामें चौबीसौ तत्व बखाने
श्लोक सातसै सहित विधाने
कपिल सूत्र सार उद्धारा ।
ग्रन्थ रच्यो महराज मुसारा ८
चौबीसौ तत्व कपिल के भाखे
या महँ कह महराज सपाखे
चौबीस ग्रन्थ पाताञ्जलि भारी
तासु अर्थ पोथम भ्रम हारी ९
योगाभ्यास आदि समेता ।
यामें पोथम कह्यो मुनेता ।
श्री पात ञ्जलि सूत्र वृत्ति अस
नाम ग्रन्थ महराज रच्यो वस १०
नामें चारि सहस्र श्लोका
देखत हीं बुध होहिं अशोका
पातञ्जलि सूत्रन के अर्थू ।

यामैं विस्तर सहित यथार्थ ।
पञ्चम मीमांसा वर ग्रन्थ ।
जैमिनि नामु आचार्य्य सुपन्थ ।
यामैं कर्म्म प्रधान बखाना
करत सकल बुध नामु प्रमाना १२
छठौं ग्रन्थ वेदान्त सुठीका ।
नामु आचार्य्य व्यास मुनि टीका
यामैं ब्रह्म विचार भली विधि
नामु विचारत होत सकल सिधि १३
इनदसु ग्रन्थ न कीरि प्रकाशा ।
कियवेदान्त कलालति कासी
हूनि महराज सहस्र मान जहँ
है आलोक सुखदेन बुधन कहँ १४
जैमिनि कर्म्म बखान्यो नीके ।
व्यास ब्रह्म वरणयो कर्षि के
अरु महराज उभय महँ गावा
सकल कर्म्म कर राम बतावा १५
मन्व ग्रन्थ का ग्रन्थ न वाहर
है आगम यहि वाह कहँ नागर

जासु अर्थ यह किहे विचारा
होत लखहि बुध मति अनुसारा १६
महादेव के मुख से आया ।
पार्वती के वदन समाया ।
अरु पिावा गिरिजा कर संवाद
भये भुशुंडी यह प्रसाद सुनाद १७
या मैं छः पदार्थ कर वखाने ।
करन पवित्र परतही कारन ।
वर्णी कारण संमोहन मारन ।
उच्चाटन विद्वेषण कारण १८
आकर्षण ये छवो पदारथ ।
तथा सकल गुण अहैं यथारथ
किय यहि विषय माहिं महराज
महानत्व परकाश समाज १९
या महं अष्टादश अपूर्व लोका
इनमें सकल मन्त्र विन रोका
अर्थ किये पर श्री रघुनाथा ।
सब मन्त्रन कह करत सनाथा २०
जिनने मन्त्र विरित समाए ।

वैसव रामदेव आधारा ।।
आनदेव का अर्थ न कैस्यहु
प्रोचहु रावनहु जैस्यहु तैस्यहु २१
पिङ्गल मैं छन्दन के नामा
अरु कविता की रीति ललामु
तासु अचार्य्य प्रोस जी अहहीं
जो सब भांति जगत हित कहहीं २२
पर यामिनी पुरान्त्व कविताई ।
केरि छन्द नहिं प्रोस बनाई ।
श्री महराज पछत्तरि छन्दा
लिख्यहु यामिनि हुके सानन्दा २३ ।
अरु संस्कृत के छन्द अनेका ।
तिनकर कहूँ लगु करहुँ विवेका
तासु नाम है इत प्रकाशा ।
पन्द्रह से प्रालोक तहँ वासा २४
तामैं जो कविता की रीती ।
महाराज करि के अति प्रीती ।
लिखी कहहु सो किमि लिखि जाहीं
तिनन लिखन हित ग्रन्थ नाही २५

वेद वदन व्याकरण बखाना।
जोत्यहि पढ़्यो जनहि कछु जाना
तासु अचार्य्य तीनि यक पाणिनि
कात्यायन रु पतञ्जलि चाणिनि २६
सूत्रकार पाणिनि कात्यायन
वार्त्तिककार पतञ्जलि गायन
भाष्यकार इमि तीनि तीनि के
मुनि कर्त्ता कहि दीन बीनके २७
पाणिनि सौं कात्यायन बेरो
अरु तिनहूं सों पतञ्जलि टेरो।
अधिक प्रमाण होत करि सीमा
भुजगराज इनहीं कर नामा २८
तिन्है पतञ्जलि कहत बखानी
सब बुध मानत इनकी बानी।
चौबिस सहस श्लोक मुनीता
रच्यो व्याकरण भाष्य विनीता २९
कैयट भट्ट विप्र कश्मीरी ॥
टीका तासु रची अति प्यारी।
कैयट विवरण है ताहि नाम

सब विधि दूषण रहित कलाम् ३०
कैयट विवरणाकर महराज् ।
टिप्पण अतिहि विलक्षण साज्
यामें कहूँ प्रोस जी केरो ॥
खण्डन मण्डन कीन घनेरो ३१
कहुँ कैयट कर खण्डन मण्डन
कीन भली विधि गनि गनि गण्डन
अरु नागेश भट्ट कृत प्रोरवर ।
अरु दर्पण सहस सुविशेषर ३२
महसि द्वान्त कौमुदी केरी ।
टीकाहै दायक मति ढेरी ।
ताहि विचार पूर्व की खण्डन
शब्देन्दि शेखरेति सुमण्डन ३३
स्यो ग्रन्थ यक तालि प्रासाहस
यामेहूँ प्रश्लोक युत वाहस ।
नासो कौमुदि सब व्याकरण्
भूषित अर्थ पदहि शोभा करण् ३४
अरु प्रोरवर अस ग्रन्थ प्रमाणिक
लागत नुच्छ यामजिमि माणिक

अरु यक ग्रन्थ बाइस पीरे भाषा
है व्याकरण ग्रन्थ में चारवा ३५
वै अनेक मुनियों की भाषी।
पाणिनितिन्हें जमा कीन्हरवी
उनपरटीका चौदह भारी ।।
बनी रवीशतिन का हिंत्यवारी३६
व्याख्येन्दि राधरेति सुटीका।
रची सकलविधि सों अति ठीका।
यामें पन्द्रह से अधिक श्लोका।
जिनपदि बुधहिन कहुँ कोगुरोका ३७
जबश्री महाराज महि माहीं।
विचरेन्द्रपति सभा जहँ राहीं।
अरु कहुँ कहुँ केवल बुध वृन्दा
जहां रहे तहँ कीन अनन्दा ३८
भे दिग्विजय सकलविधि जुहूँ
अरु ग्रन्थ समाप्त भयो निमित्तहवा
जोजो प्रश्न बुधन करि दीना ।
समाधान जिमि कीन प्रवीना ३९
व्याकरण ग्रन्थ सहस दुइ श्लोका।

अरु चौविसूहरिपद गति श्लोका ५०
उन मैं कृष्णचन्द्र शृङ्गारु
वर्णन कीन अनेक प्रकारु ।
पर अवतार आन की गाथा ।
तुम्हु कन वर्णी बुधगणनाथा ५१
श्रीमहराज गीत गोविन्दू ॥
रच्यो एक है अतहि अनन्दू ।
याँमें बारह से श्लोकू ॥
निरखतहीजो करतविलोकू ५२
चौदीपौ अवतारन केरी ॥
यामैं गाथा रची घनेरी ॥
एक विसु पद प्रति अवतारा
अतिहि विलक्षणसहित विचारा ५३
ऐसो अद्भुत ग्रन्थ न देखा ॥
यद्यपि अनेकन कविकृत पेखा
किमि वरौं जिन देखा ताहीं ।
वैसानत अपने मन माहीं ५४
रचनि भर्त्तहरी सीनि प्रकारा
रचेविचित्र अतीव बोध कर

राजनीति यक में तिन गाई।
अरु यक में शृंगार बनाई५५
यक महँ प्रभु वैराग्य बखाना।
याही विधि महराज महाना।
प्रानक त्रयी रची अति नीकी
जाके लखत लगत वह फीकी५६
ताकी उत्तमता किमि कहऊँ।
देखत ही सुख होत नवक ऊँ
अरु जो श्री भागवत दिखण्डन
विद्यारण्य यतीकिय भण्डन५७
नामे लिखा कि यह श्यामो कू।
धन्य नरन्य हु कोउ बड़ भो कू॥
नासु उपर श्री युत महराजू॥
खण्डन लिख्यो नाम सुनु भ्राजू५८

## अनुष्टुप्छन्दः

श्री मद्भागवत द्रोह दम्भ भूधर भेदक॥॥
रम्भो लिकाह्वय नाम पाखण्ड मत छेदक५९

## चौपाई

हैं यामें प्रान त्रय अप्रालोका

जिन लखि विद्यारण्य संयोका।
दीन अनेक प्रमाण करारी ।
महाराज बहु भांति विचारी ६०
कह यह अवधि व्यास कृत ग्रन्था
ग्यहि तुम सरहत मोहे कन्था ॥
याके दीन प्रमाण घनेरे ॥
सो लखि दच्चु के कुल यहि बेड़े रे ६१
श्रीमहराज सलोक अनेका ।
रचे सकल्पने भरे विवेका ॥
तिनमें राम चरण बुधजेते ।
देखे हैं वैहै सब ऐते ॥ ६२
करुणा कल्पलता अभिरामू
श्रीरघुनाथ लोक लल्लामू ॥
यक से तीनि पद्य यह माही ।
रचे बुधन कह खण्ड पोसाही ६३

## हरिगीतिका

श्रीहनुमदष्टक कालिकाष्टक शङ्कराष्टक मोहहम
लम्बोदराष्टक सरयु अष्टक सकल नवविधि कहहुहम
नवनव सलोक बहु पद्य तुलसीदास विरचे मोहही ॥

जे कूर कायर कपट कलि कलुष कलंकी ते सोभही ई ६

## चौपाई

वेद स्तुति वर्त्ति ग्रो अप्रलोकू।
रामस्तोत्र एक दूजा श्लोकू।।
पुनि रामस्तव दूसर येता ।
श्री ज्ञान की स्तोत्र है तेतो ई ५
रघुनन्दन षोडशाक विचित्र।
सत्रह पद्य के सु पवित्र ।।।
कुण्डलिका श्री हनुमत जीका
छाप्यै सकल भांति सोंढीका ई ६

## दोहा

दोहावलि रत्नावली यक से बारह पद्य ।।
नित्यनियम श्री राम कर यामें वर्ण्यो सद्य ई ७

## चौपाई

अरु विचित्र रामायण एकू
पद्य पञ्च प्रान्त सहित विवेकू।
बरवा छन्द रसिक रञ्जन अस
रामायण कर नाम करत वपु ई ८
चारि सहस्र पद्य वर या मैं ।।

सकल मनोरञ्जन कविता मैं।
अंत मैं पद्य राम सङ्गीता ॥
राग विमल पद परम पुनीता ६८
छन्नि पुरा कवित के ऋतु वरनि
सो दोहा होलिका विसर्जन ॥
अक्षरमाला व्यारव्या एक।
श्लोक बद्ध यहहै अति नेक ७०
अक्षरमाला भाष्य बहोरी ।
वरवा छन्द माहिं गति भोरी ॥
अक्षरमाला भाष्य अनूपा ॥
सुभग सवैया छन्द निरूपा ७१
दर्पन पुरतक पद्य सो केरो ।
श्री दिग्विजय पुरतक तिमिहेरो
रामसहस्र नामयक पावन ॥
द्विपुरान पद्य कर अतिहि सुहावन ७२
उद्दंग पद्य माहिं छन्न नोई ॥
भाँख्यो ग्रन्थ लालजी जोई ॥
सो सबलै महराज सुनावा ॥
अति प्रसन्न भे बहु मन भावा ७३

कह कोउ संस्कृत यहि अरु भाषा
दोनो मैं वर्णत सो चारवा ।
अवतक वर्णत कीनन कोई
नहि संस्कृत नहिं भाषहि सोई ७४
यक दिन रामचरण बुध मोसो
कहा मीत यह होइहि तोसों ।
मम अरु निज गुरु चरित बखानी
करहु पवित्र सबै निज बानी ७५
यह सुनि मम मति नहिं यहि योगू
जानत हैं सगरे बुध लोगू ॥ ॥
पर मैं निज रसना शुचि हेतू ।।
निजगुरु चरित कहा जस चेतू ७६
सो गुरु पद सरोज की दाया ।।
होइहि अरु रघुनाथ सहाया ।।
सो यह करब संस्कृतहु माहीं ॥
गुरु पद कृपा करन को नाही ७७
गुरु पद पूजे अधिक तिरपारी
संवत मैं श्री अवध निवासी ॥
जबते भये श्री गुरु महराज ।।

नबतेकतहुँ नगेकरि साजू ७८
सैंतालीस वर्ष बसि नीके ।
दान मान दैसबहि सुठीके ।।
कीन अनेकन चरित अनूपा।
परकछु कह्यो स्वमति अनरूपा ७९
अब वर्णन्त जिमि श्री महराजा
ज्यहि हित आये करिसो काजा
परमधाम गे तजि स्वपुरीरा।
अवध माहिँ नहिँ कछु तन पीरा ८०

शार्दूलविक्रीडितम्

वेर्यविस्मुपदाग्निनन्दपुरागे १९३० पक्षेव
लक्षेरवौ पक्षत्र्यांसरयूसमीपसदने भाद्रे दि-
वागादिवम्।। श्रीरामेति वदंस्तनुन्तुलसिका
नीमेमुनेस्वान्धुरन्न्यस्य श्री मदुमापतीरघुव-
रेमिर्चंस्वभासद्गुरुः ।।१।।

चौपाई

रहे आठ दिन जब महराजहि।
परमधाम चलिवे के साजहि।
नवकछु ज्वर प्राणिमैं व्यापा।

परचिकाल असनानरु जापा २
सन्ध्या वन्दन तीनिहु काला
करत रहे सबनियम कृपाला
भादौं वदि चौदशि भृगुवारा
महाराज करि सकल विचारा ३
श्री भारत वाल्मीकि भागवत ।
पुस्तक चय जिन कहँ मगवावत
प्रति पुस्तक धरिके दीनारा ।
पाँच पाँच द्विजवरन हँकारा ४
जो अति वेद शास्त्र महँ नागर
तिन्हे संकलप दीन करि आदर
अरु प्रति वार अमावस काही
कृष्णा पाँच धेनु मगवाही ५
सकल सवत्सा काञ्चन शृङ्गी
रूप्य खुरी सौभाग्वरि नुङ्गी ।
निजकर कमल श्रोत्रियन काही
दीन शास्त्र विधि सो किमि गाही ६
भादौं शुदी प्रतिपद रविवारा ।
रवाग्निनन्दशशि १९३० वर्ष सुखसारा

प्रातस्नानकु सन्ध्यादिकसब।
करिसुचित्त ह्वैबैठिजायतब ७
निजमण्डलीउपरमहराज्।
वातैंहोनलगी शुभकाज्॥
इतने में दिन घटिका तीनी
चढ्यौ होत रहिवात प्रवीनी ८
कह महराज सेवकन पाही।
लागि पिपासाहै हमकाही॥
करहु जाय यमुनानतयारी
यह सुनिप्रभुनिजकाजसवारी९
यह सर्व्वदा नियम रहभारी।
जब मधुहरी उपर पगुधारी।
विन सुनानकीन्हे महराज्।
कबहुन पियहु वारि कुरिमाज्१०
उठि सनान मन्दिर सुहगुयऊ
स्नान भलीविधि सोनहु कियऊ
कछुक श्रमथिलहै गयहु पुरीत
मुखसे निकसे वचन अनिंधीत११
कह सरयूतट पर लै चलहू॥

कोइ न सम्मुख कोइ विकलहू
सुत महन्त जी अति घबड़ाये।
आनन तुलसिहि गङ्ग बहाये १२
तिन पर तिलगरि श्री महराजहि
उत्तर मुख लै बैठि विराजहि।
श्री महराज लेय कर माला॥
लगे जपन श्री राम कृपाला १३
अरु सब राम राम धुनि कीनी
गुरु कहि राम जम्भोई लीनी॥
परम धाम चलिबस्यङ्क कृपालू
सकल लोग तब भयङ्क विहालू १४
बच्यो रहै दिन घटिका चारी।
तब वैकुण्ठमगहि पग धारी
कोलाहल सुनि अवधनिवासी
आये धाय दर्शन के आशी १५
बाबू बच्चूसिंह प्रवीना॥
डारेउ मन घृत चन्दन दीना।
अरु सुरदारु आम बहु लागू॥
एक बहु मोल दुशाला पागू १६

यह सब दाह क्रिया सामग्री ॥
पढ़ई बाबू जीव गुणागरी ॥
अरु रघुनाथदास महराजू ॥
निज अधिकारिन कहँ यह काजू १७
सौंप्यहु दाह क्रिया करनीके ।
वै मन पावक घृत लै टीके ॥
अत्युत्तम मुनम एक दुशाला ।
विविधि भांति सूती पटजाला १८
चन्दन अगर तगर लै दीऊ ।
अधिकारी आयेसु निसीऊ ॥
कालिदास नामीय कदूजे ॥
जगन्नाथ दासेति सुपूजे १९
तिनदिन अना वृष्टि रहि भारी
जस प्रणाम त्यागयो चित्यवारी
महा वृष्टि भै पहर प्रमाना ॥
तब रघुनाथ दास जी भाना २०
रेवतइन्द्र देखि महराजहि ॥
व्याकरणोपाध्यायजी महि आजहि
मध्यान्होत्तर राम घाट पर ॥

भयो दाह सब ठाटि ठाट बर२१
श्री महन्तजी करि कै दाहू ।।
दीन तिलाञ्जलि अरु सबकाहू
दीपदान घटदान बिधाना ।।
करत रहे प्रति दिन करि ध्याना२२
भादौ शुदि द्वादशी कुजबारा
भयहु द्वादशाह वेद अनुसारा ।।
एकादशी चन्द्र सुत बारा ।।
महापात्र नहवौ पगुधारा२३
भयहु त्रयोदशाह को ।
कहत दान कवि लहै याह को
षोडश त्रयोदशन मै यक एका
प्राप्या दीन महन्त सटेका२४
सब पर षट ऋतु योग्य नवीने।
वसन विचित्र धरे परवीने ।
सब पर यक यक श्रेष्ठ दुशाला
प्राप्यन पर राख्यो त्यहि काला२५
महा छाग षोड़श नहदीना।
षोड़श धेनु वत्स युत पीना ।।

नीलवृषभचरि बाछि समेता ।
छोड़ा विधि पूर्वक पुनहेता २६
घड़ाफरान कटोर कटोरी ।।
आदि पचानव पात्र बटोरी ।
दीन लखौ बहु संपति निहोरा ।
तुरग तीनि बहु मोल छकोरे २७
यक रथ यक बग्घी यक पीनस
नामदान यक पालकि सजिखस
बड़े बड़े तम्बू दिय तीनी ।।
सहित कनात बात भलि कीनी २८
अरु दूय ऊट साजि सब साजू
महापात्र भोजन अति भाजू ।।
मन पचीपुा तीनीके चावल ।।
अरु मन पांच मखाना लावल २९
श्रीरघुनाथदास यह पढ़वा ।।
महापात्र सबलह्यो यकठवा ।
नामो महाराज कर येहू ।।
रहा नियम सब भांति सनेहू ३०
प्रातहि कल्प धेनु दधि माहीं ।

ल वा मरवाना केरि भ्यवाहीं ।
वह मध्याह्न सन्ध्य के पाछे ।
त्यागत रह्यो भोग नित आछे ३१
निपिया मैं एक पावत्तिनि चावल
अरु तरकारी एकहि पावल ॥
अरु यक पाव घृत्त नवनीता ।
सैन्धव लवणा समेत पुनीता ३२
भोजन होत रहा नितयेही ॥
यासों पढ यहु तासु सनेही ॥
यक प्रात पञ्चाग्नि महपाचा
पाय सादि सो कियमुखयाचा ३३
तेरह से मुद्रा दक्षिना हीं ॥
दीन महन्त जीव तिनकाही ॥
है निहाल गो महा द्विजेन्द्रा ॥
निज निज सदन मनहु मनुजेन्द्रा ३४
अग वासर कह त्रयोदशाहू ॥
भयहु त्रयोदश विप्र बुलाहू ॥
महा कुलीन पाच सर वरिहा ।
विद्वन्त मसिगरे वरवरिहा ३५

इन्हैं ज्येंवायदीन पद दाना
जाकरहै यहि भांति विधाना॥
यक यक छत्र उपानह माला॥
पूजन सामग्री बहु जाला ३६
अङ्गलीय यक यक सब बसना
पात्र सकल भूषण बहु जतना
यहि आदिक दै सबन बिदावा
तिनमहँ एक एक गज पावा ३७
तदनन्तर सहसन नर भोजन
कीन करावा तासु न बोजन॥
वार्षिक आदि सकल यहि भांती
कीन महन्त न सो कहि जाती ३८

## दोहा छन्द

रामचन्द्र गुरु मित्र सभासद श्रीमदुमापति जी को।
जो गाइहि दिग्विजय चरित यह सो पाइहि फल नीको
अरु गुरु पद सरोज रति होइहि रघुवर चरण सरोजे
अमल भक्ति पाइहि सोजन यह कहत बात करि रोजे ३९
सुकुल बहोरण राम तनय वर धीर धीरमणी नामा
तासु इन्द्र मणि सुत तासु तोष रामगुण धामा

तासुतनुज श्रीजावन्दसुखकन्दद्विजन मैं ठीके।
अवधराम प्रभुनामसकलगुणाधामतासुसुतनीके ४०
विप्रमहेप्रादत्तसुजाताके वारहबङ्कि प्रदेशा।।
वहिरालयजनपदगोमतितटधनावली कृतवेशा
तेन निजमतिअनुरूपनिरूपानिजगुरुचरणिअनूपा
जोयहिपढ़िहिसुनिहिनितगाइहिसोनपरिहिभवकूपा४१

दोहा

यामहैंयकतिशासर्गा अक्षौनआठसै श्लोक।
मम छतहैंगुरुप्रियन्ह को पढ़तै करहिं अशोक४२

इतिश्री बारहबङ्की प्रदेशीय बहिरालयजन पदान्तर्गतिगोमत्युत्तर तट स्थ धनावली निवासिमैभिगवाँ सुकुलोपनामक महेशादत्त प्रार्म्मनिर्म्मित श्री मदुमापति दिग्विजय श्लोत्तस्मर्त्त पाठकर्त्तृभ्यस्तदभीष्टप्रदोवो भूयात्
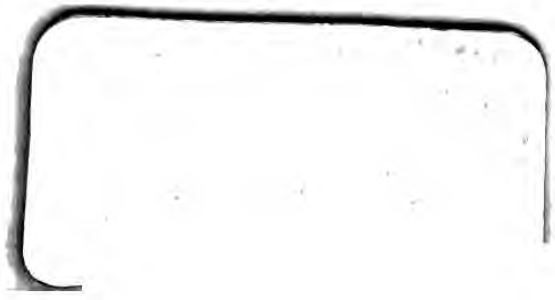
इति